फिर से बनी अयोध्या योध्या

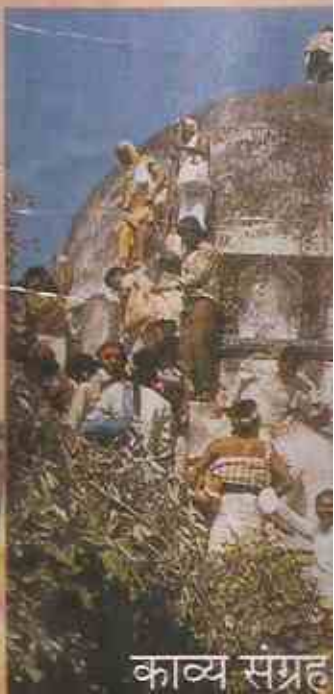

काव्य संग्रह

फिर से बनी अयोध्या योध्या

काव्य संग्रह

संपादक

विमल लाठ

जुगल किशोर जैथलिया

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

कलकत्ता

प्रकाशक :
श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय
१ सी, मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट,
कलकत्ता-७०० ००७
दूरभाष : ३८-८२१५

मूल्य : ३०.००
संस्करण १९९१

मुद्रक : **एसकेज**
८, शोभाराम बैसाख स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

Phir Se Bani Ayodhya Yodhya (Selected Poems)
Rs. 30.00

समर्पित है यह काव्यांजलि

अयोध्या के उन असंख्य बलिदानी वीरों को
जिनके लिये श्रीरामजन्मभूमि ईंट, गारा और चूने का
एक भवन मात्र नहीं, मातृभू की अस्मिता का पर्याय रही है।

●

समर्पित है यह काव्यधारा

हिन्दुस्थान की उस तरुणाई को
जो कारसेवक बनकर सरयू-तट पर अवतरित हुई

●

समर्पित है यह काव्यसुमन

भारतमाता के उन लाड़ले सपूतों को, हुतात्माओं को
जिन्होंने सीने और माथे पर अत्याचारी की गोली खाई।

भूमिका

श्री राम मन्दिर के पुनर्निर्माण का संकल्प सोयी हुई भारतीय अस्मिता को जगाने का संकल्प है। भारत की पहचान भारतीय संस्कृति के निर्माताओं और उन्नायकों के कर्तृत्व के माध्यम से ही हो सकती है। श्रीराम हमारी संस्कृति के सर्वोत्तम प्रतीकों में से हैं। भारतीय संस्कृति का मर्यादा-बोध उनमें मूर्त हो उठा है। न केवल पुत्र और शिष्य के रूप में बल्कि भाई, पति, प्रजारंजक राजा के रूप में भी उनका चरित्र हमारे आदर्श को सम्यक् रूप से अभिव्यक्त करता है। समाज के सभी स्तरों के व्यक्तियों के प्रति सहज सद्भाव के कारण उनकी संगठन-क्षमता भी अद्भुत रही है। ब्राह्मण से चाण्डाल तक, नगरवासी से वनवासी बंधुओं तक, ऋषि महर्षि धर्मात्माओं, पुण्यात्माओं से पापियों और पतिताओं तक उनकी सद्भावना सहज ही व्याप्त रही है। अजेय प्रतीत होते हुए अधर्म के विरुद्ध सामान्य सहयोगियों और उपकरणों के सहारे संघर्ष कर, अधर्म को परास्त कर धर्म की स्थापना कर उन्होंने प्रमाणित किया है कि महा-पुरुष अपने अंतर्निहित सत्त्व के द्वारा विजयी होते हैं, स्थूल उपकरणों के द्वारा ही नहीं। उनकी शूरता यदि अभिभूतकारिणी है, तो उनकी सुशीलता हृदयग्राहिणी। अपने आधिभौतिक रूप में वे भारत के सर्वश्रेष्ठ न्याय-परायण, धर्मरक्षक शासक हैं तो अपने आधिदैविक रूप में 'रामस्तु भगवान् स्वयं.....' भक्तों के करुणा वरुणालय इष्टदेव और अपने आध्यात्मिक रूप में साक्षात् अपरोक्ष ब्रह्म। अपनी-अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार उनके किसी रूप से भी जुड़कर हम कृतार्थ हो सकते हैं। यदि कोई उन्हें भगवान या ब्रह्म के रूप में स्वीकार न भी करना चाहे तो भी भारतीय संस्कृति और इतिहास के शलाका पुरुष के रूप में उनके प्रति श्रद्धा ज्ञापित करना प्रत्येक भारतीय और भारतीय संस्कृति प्रेमी का कर्त्तव्य है। श्री राम के ऐतिहासिक चरित्र को दृष्टिगत रखकर उनके असंख्य गुणों

के आधार पर ही ऋषिवाणी कह उठी थी—'रामो विग्रहवान धर्मः' अर्थात् श्रीराम मूर्तिमान धर्म हैं।

इसे विडम्बना ही कहा जायगा कि कुछ आधुनिक भारतीय बुद्धिजीवियों की दृष्टि में आज के भारत की सबसे बड़ी पहचान धर्मनिरपेक्षता है। विदेशी विचारों के वाहक शब्दों का भ्रांत अनुवाद अपनी संस्कृति के स्वरूप को कितना विकृत कर सकता है इसका एक उदाहरण है 'सेक्युलरिज्म' के लिए धर्म निरपेक्षता शब्द का प्रयोग। वैदिक ऋषियों से लेकर स्वामी विवेकानन्द तक एकमत है कि भारत की अपनी विशिष्ट पहचान धर्म के कारण ही है। धर्म ही पशुओं से मनुष्य को अलग करता है, यह निर्णय सभी भारतीय विचारकों का सर्वसम्मत निर्णय है। विनोबा भावे ने ठीक ही कहा है कि अंग्रेजी की पढ़ाई लिखाई के कारण हमारे देश की जनता राहु और केतु के रूप में विभक्त हो गई है। आज जो हमारे शासक और विचार निर्माता हैं उनकी शिक्षा-दीक्षा अंग्रेजी के माध्यम से होती है, वे अंग्रेजी में ही सोचते हैं और विदेशी विचार ही उनके लिये आदर्श हैं। वे राहु की तरह केवल सिर ही सिर हैं, भारत के शरीर से, भारत की सामान्य जनता से उनका सम्बन्ध कट गया है। भारतीय जनता की भावना, मान्यता और मूल्य-चेतना उनके लिये न सामान्य है न महत्त्वपूर्ण। क्या सचमुच भारत धर्म-निरपेक्ष हो सकता है? जिस अर्थ में भारतीय जनता धर्म का प्रयोग करती है उससे केवल उपासना पद्धति का बोध नहीं होता, मनुष्यत्व के लिए उपयुक्त समस्त गुणों की समष्टि का बोध होता है, एक उदात्त जीवन पद्धति का बोध होता है। धर्म तो वह कल्याणमय ऋत् तत्व है जो समस्त सृष्टि को, समस्त प्रजा को धारण करता है और जिसके लक्षणों को यथासम्भव धारण कर व्यक्ति या समाज अपने को अच्छा व्यक्ति, अच्छा समाज बनाता है।

आधुनिक प्रगतिशील भारतीय विचारकों ने यूरोप के इतिहास के अध्ययन से पाया कि रोमन कैथोलिक उपासना पद्धति और विचारधारा ने विविध देशों के शासकों पर और स्वतंत्र वैज्ञानिक चिन्तन पर बलपूर्वक अंकुश लगाना चाहा था। अपने विकास के लिये एक ओर जहां विविध शासकों ने पोप के नियन्त्रण को अस्वीकार कर दिया वहीं दूसरी ओर

वैज्ञानिक चिन्तकों ने विज्ञान के विकास में बाइबिल की मान्यताओं को बाधक नहीं बनने दिया, भले इसके लिये उन्हें कठोर दंड सहने पड़े। इस प्रवृत्ति को 'सेक्युलर' कहा गया जिसका वास्तविक अर्थ होता है 'इहलोकवादी'। सेक्युलर विचारक मजहब पर विश्वास नहीं करते और शासन तथा वैज्ञानिक चिन्तन के लिए मजहबी हस्तक्षेपों को अस्वीकार करते हैं। पं० जवाहरलाल नेहरू और उनके अनुयायियों ने साम्प्रदायिकता से बचने के लिये सेक्युलरिज्म को सबसे बड़ा कवच घोषित किया और भारत के मंगल के लिए धर्मनिरपेक्षता को एक बड़े मूल्य के रूप में प्रचारित किया। वे यह भूल गये कि भारत में धर्म शासन और वैज्ञानिक चिन्तन के उन्मुक्त विकास के आड़े तो कभी आया ही नहीं उनके सम्यक् विकास के लिए प्रेरक बना रहा। रिलिजन या मजहब का पर्यायवाची धर्म को मानकर धर्मनिरपेक्षता शब्द गढ़ा गया और इसका विचार नहीं किया गया कि इस भ्रान्त अर्थ में यह शब्द सम्पूर्ण भारतीय परम्परा के विरुद्ध जाता है।

सेमेटिक सन्दर्भ में रिलिजन या मजहब का अर्थ होता है एक आचार्य और एक पूज्य ग्रन्थ द्वारा निर्दिष्ट कर्मकाण्ड एवं सामाजिक विधिविधान जिसकी अभ्रान्तता और अपरिवर्तनशीलता स्वतः सिद्ध है। स्वाभाविक रूप से यहूदी ईसाई और इस्लाम के विश्वासी अन्य उपासना पद्धतियों के वैरभावापन्न एवं मुक्त वैज्ञानिक चिन्तन के प्रति असहिष्णु हैं। हमारा सनातन धर्म न किसी एक व्यक्ति पर न किसी एक ग्रन्थ पर निर्भर है। हमारी सामान्य मान्यता यह है कि श्रुतियाँ एवं स्मृतियाँ विभिन्न हैं, कोई भी एक ऋषि ऐसा नहीं है जिसका वचन अन्तिम प्रमाण माना जा सके। धर्मगत तत्त्व बुद्धि की गुहा में निहित है अतः महापुरुषों का अनुकरण करना ही श्रेयस्कर है। हमारा इतिहास साक्षी है कि भारतीय शासन उपासना पद्धतियों के प्रति समान आदर व्यक्त करता रहा है और किसी भी चरक, सुश्रुत, वराहमिहिर या आर्यभट्ट को उनके वैज्ञानिक विचारों के कारण न जलाया गया न दंडित किया गया। अतः पश्चिमी अर्थ में सेक्युलरिज्म को धर्मनिरपेक्षता के रूप में हमारे ऊपर लादना एक सांस्कृतिक अपराध है। धर्म विरोधी कल्पना के रूप में सेक्युलरिज्म हमें अस्वीकार है। हां, शासन किसी उपासना पद्धति के प्रति पक्षपात

न करे, यह हमें सदा स्वीकार रहा है। भारतीय संस्कृति ने सदा यह प्रतिपादित किया है कि भगवान तक पहुँचने के लिए अनेक पथ हो सकते हैं और वे सब समान रूप से आदरणीय माने जाने चाहिए। अतः शासन को पंथ-निरपेक्ष होना ही चाहिए। भारतीय मान्यता के अनुसार राजा या शासन का भी एक धर्म होता है जिसे राजधर्म या शासन धर्म कहते हैं—जिसका पालन उसको भी करना चाहिए। प्रजा को भारतीय अर्थ में धर्मनिरपेक्ष बनाना तो आत्मघात करने के समान है। अतः सैद्धान्तिक स्तर पर सेक्युलरिज्म को शासन की पंथ निरपेक्षता के रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है, धर्मनिरपेक्षता के रूप में नहीं।

व्यावहारिक स्तर पर तो आज के राजनीतिक दलों की धर्म-निरपेक्षता केवल चुनाव सापेक्षता होकर रह गई है। चूँकि मुसलमानों और ईसाइयों के वोट थोक रूप में पड़ते हैं अतः उन्हें सब प्रकार की सुविधा देकर, उनको सांप्रदायिकता से आँख मूँदकर, उनके अनुचित और कभी-कभी राष्ट्र विरोधी हठों को स्वीकार कर अधिकांश राजनीतिक दल अपनी धर्मनिरपेक्षता प्रमाणित करते रहते हैं। उसी मात्रा में हिन्दुत्व को कोसते रहना और हिन्दू हितों को कुचलते रहना इन मक्कार धर्म-निरपेक्ष राजनीतिक दलों का सहज बाना बन गया है। उनका यही दुष्प्रयास रहता है कि धर्म निरपेक्षता के घटाटोप में भारतीय अस्मिता अपने आपको भूलकर सोयी रहे।

इस सन्दर्भ को दृष्टिगत रखकर यदि विचार किया जाय, तो यह सहज ही प्रतीत होगा कि श्री राम मन्दिर के पुनर्निर्माण का आन्दोलन हमारी अस्मिता को जगाने का आन्दोलन है। महमूद गजनवी से बाबर तक विदेशी आक्रांता और बाद में उनके अनुयायी हमारे मन्दिरों को तोड़कर हमारी अस्मिता को कुचलने का बर्बर प्रयास करते रहे हैं। स्वाधीनता के बाद भारत के लौह-पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल ने सोमनाथ के ध्वस्त मन्दिर का पुनर्निर्माण कर अपनी प्रबुद्ध अस्मिता का ही प्रमाण दिया था। उसी क्रम में श्री राम जन्मभूमि के मन्दिर को ध्वस्त कर बनाए गए बाबरी ढांचे का राममन्दिर के रूप में रूपान्तरण राष्ट्रीयता की सहज मांग है। इस बात के अखण्डनीय प्रमाण हैं कि मुस्लिम देशों में विभिन्न प्रयोजनों से मस्जिदें हटायी जाती रही हैं।

भारतीय मुसलमान भी इस सत्य को पहचानें कि सांस्कृतिक दृष्टि से वे श्री राम से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक राष्ट्रवादी भारतीय को चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान या ईसाई, अपनी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परम्परा से जुड़कर गौरव का अनुभव करना चाहिये। इस दृष्टि से भारतीय मुसलमानों को यह समझना चाहिये कि बाबर एक विदेशी आक्रमणकारी था और उसने भारतीय स्वाभिमान को कुचलने के लिए ही श्री राम मन्दिर को ध्वस्त किया था। आज करोड़ों हिन्दुओं की भावना उस अन्याय का परिमार्जन करने के लिए कटिबद्ध है। उस भावना का आदर करते हुए भारतीय मुसलमानों का यह फर्ज है कि वे सौहार्द्रपूर्वक उस ढांचे को स्थानांतरित करने में सहयोग दें। अगर ऐसा हुआ तो सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में यह एक अनोखा दृश्य होगा जब हिन्दू और मुसलमान मिलकर श्री राम जन्मभूमि में श्री राम मन्दिर का नवनिर्माण कर और किसी भी उपयुक्त स्थली पर वर्तमान ढांचे को सम्मानपूर्वक स्थानांतरित कर और आलीशान मस्जिद बनाकर देश की राष्ट्रीयता को परिपुष्ट करेंगे।

किन्तु छद्म सेक्युलरवादियों को यह न्यायोचित समाधान स्वीकार करना अपने अस्तित्व को खतरे में डाल देना लगता है। फलतः वे मुस्लिम सांप्रदायिकता को भड़काकर श्री राम मन्दिर के पुनर्निर्माण का उग्र विरोध करते रहे हैं। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और श्री मुलायम सिंह यादव के शासनकाल में निहत्थे-अहिंसक रामभक्तों पर जो लोमहर्षक अत्याचार हुए हैं वे भारतीय इतिहास के लिए कलंक स्वरूप हैं। किन्तु इन अत्याचारों ने अन्याय और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए रामभक्तों के स्वाभिमान को चुनौती दी जिसे निर्भयता-पूर्वक स्वीकार कर कारसेवकों ने पुनः प्रमाणित किया कि धर्म की प्रेरणा से जाग्रत और संगठित मनोबल के समक्ष शासकीय पशुबल तुच्छ है। ३० अक्टूबर १९९० के दिन समस्त देश ने स्तम्भित होकर देखा कि एक ओर शासकों की हठकारिता को उजागर करते हुए शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित सैन्य बल था और दूसरी ओर अडिग आत्मविश्वास और अजेयमन लिये हुए कारसेवकों का समूह। धर्मप्राण कारसेवकों ने अपना रक्त बहाकर श्री राम मन्दिर के पुनर्निर्माण के लिए कारसेवा की और

श्री राम मन्दिर के गुम्बदों पर भगवा ध्वज फहरा दिया। मुलायमसिंह यादव की रक्त पिपासा ने २ नवम्बर १९९० को अपना वीभत्स रूप दिखाया, पूर्णतः निःशस्त्र कीर्तनरत कारसेवकों पर गोलियां चलीं, आवासों से निकाल-निकालकर कारसेवकों की हत्या की गई। यह नृशंस क्रूरता उन कारसेवकों को 'पाठ पढ़ाने' के लिए की गई थी जिन्होंने ३० अक्टूबर को भगवाध्वज फहरा कर शासकों के दंभ को चूर-चूर कर दिया था किन्तु बज्र संकल्प ऐसी नृशंसताओं से टूटते नहीं और दृढ़ होते हैं, उन्हें परास्त कर विजयी होते हैं।

कैसे सम्भव था कि संवेदनशील भारतीय चित्त इन बलिदानियों के श्रद्धा से मुखरित न हो उठता एवम् नृशंस अत्याचारियों के प्रति घृणा और आक्रोश से उबल न पड़ता। ये युग्म भावनायें ही मूर्त हो उठी हैं इन कविताओं में। इन कवियों ने अनुभव किया है कि अयोध्या की गलियों में बहा हुआ खून केवल कारसेवकों का नहीं भारतीय तरुणाई का था और उस धर्मयुद्ध में व्यक्त हुआ बलिदानी शौर्य भारतीय संकल्प का था। ये कवितायें हमें आश्वस्त करती हैं कि कारसेवकों का बलिदान व्यर्थ नहीं जायगा, उनकी भस्म का कण कण दृढ़ संकल्प के अमरण बीज के रूप में कोटि-कोटि मनों में अंकुरित होगा और श्री राम मन्दिर का पुनर्निर्माण अवश्यमेव होगा।

पिछले एक साल का भारतीय इतिहास इस संभावना को सत्य बनाने की दिशा में बढ़ता हुआ इतिहास है। कार सेवकों के अमर बलिदान की प्रथम पुण्य तिथि के दिन अर्पित है भारतीय जनता को यह काव्यांजलि, इस अनुरोध के साथ कि उन बलिदानियों की स्मृति तो सुरक्षित रहे ही उनके संकल्प को पूर्ण करने में हम सबका योगदान भी हो।

२८०, चित्तरंजन एवेन्यू
कलकत्ता-७०० ००६
दिनांक २ नवम्बर १९९१

विष्णुकांत शास्त्री

देश की भाग्य रेखा

रामायण के इस देश में रावणों ने कई बार नायक बनने के षड्यंत्र रचे। कई बार वे कुछ काल के लिये सफल हुए और कई बार लम्बी कालावधि के लिये आंशिक सफलताएँ उन्हें मिलीं। यह दुष्चक्र स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भी चलता रहा, विभाजन के बावजूद। किन्तु जब राष्ट्रवादी जनमानस द्वारा दृढ़ संकल्प किया गया कि भारतीय संस्कृति के रूपकार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी का उनकी जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर पुनर्निर्मित हो, तो यह संकल्प स्वतंत्र भारत का सबसे बड़ा जन-आन्दोलन बनकर उभरा। पूरे देश में तरुणाई ने शंखनाद किया। आशा, आस्था, विश्वास निष्ठा, उत्साह की तरंगों का न केवल संस्पर्श मिला, आसेतु हिमाचल उनके दर्शन हुए—'सम्भवामि युगे युगे'।

यह स्थिति भला रावणों को कहां तक पचती! मोर्चे बांधे गये, पूरे उत्तर प्रदेश का यातायात ठप्प कर दिया गया, पूरा प्रदेश ही कारागार बना दिया गया, गर्वोक्ति की गयी कि बाबरी ढांचे पर 'परिंदा भी पर नहीं मार सकता।' परिणाम इतिहास की थाती है—जिस प्रकार दानवों से आप्लावित आर्यावर्त में सूर्यवंशी अरिदमन राजा रामचन्द्र सूर्य का तेज समाहित कर मध्याह्न में अवतरित हुए, उसी प्रकार इस तथाकथित 'धर्म निरपेक्ष' देश में धर्म के तेजोमय स्वरूप का ध्येयनिष्ठ कर्म के साथ समन्वय कर कारसेवक ३० अक्टूबर १९९० के दिन जन्मभूमि पर अवतरित हुए। जन्मभूमि-मुक्ति के लिये लड़ा जाने वाला यह ७७वां युद्ध था। विजय की प्रतीक गैरिक पताका गुम्बदों पर फहरा दी गई।

किन्तु, २ नवम्बर का दिन बर्बरता को भी लजाने वाला कायरता का अन्तिम अध्याय था जब निहत्थे कारसेवकों को जन्मभूमि परिसर से काफी दूर घरों से निकाल-निकाल कर गोलियों से भून डाला गया, सड़कों पर बैठे दोनों हाथों से ताली बजाकर कीर्तन करते रामभक्तों के माथों में गोलियाँ दागी गयीं, लाशों को गायब कर दिया गया या सरयू में पत्थर बांधकर डूबो दिया गया। क्या इससे ३० अक्टूबर की रावणों की पराजय की शर्म धुल गयी ?

सन् १९९० का यह प्रकरण देश की भाग्य रेखा बदल देने का संकल्प-अध्याय बना है। जो भारत को भारतमाता के रूप में श्रद्धा करते हैं, अपने पांवों से ऋषि-मुनियों की इस पावन धरती का, विष्णुपत्नी का, पहला स्पर्श करने के पूर्व जिनके मुँह से स्वतः 'क्षमस्व मे' का उच्चारण होता है, उनके लिये श्रीराम जन्मभूमि का गौरव, देश की अस्मिता का पर्याय है। इस काव्य-संग्रह में इसी श्रेणी के रचनाधर्मियों ने अपना योगदान दिया है। स्वनामधन्य श्री जयशंकर प्रसाद ने कहा था, 'काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है, एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा', और कहा था, 'काव्य की आत्मा है सत्य'। किन्तु खेद है, हमारे देश में ऐसे भी तथाकथित 'प्रगतिशील' बुद्धिवादी हैं जो सत्य को सत्य मान लेने में अपनी ही दृष्टि में गिरते-पड़ते रहते हैं। दोष सम्भवतः उनका नहीं है क्योंकि उन्हें ऐसे संस्कार ही नहीं मिले कि वे भारत को भारतमां के रूप में देखें, उनके लिये देश का अर्थ है मात्र कुछ जंगल, नदी, पहाड़, रास्ते, मकान, सरकार। इसमें उन्हें देवत्व के दर्शन कैसे हों ? जब-जब भी देश के समक्ष 'कमल' का प्रश्न उठा है, ये 'रोटी' लेकर आ खड़े होते हैं और उसे ही गोल-गोल घुमाकर चीत्कार करते हैं—देखो, मैं तुम्हारे लिये चांद लेकर आया हूं। केवल भौतिकता की बिना पर टिके ये बेचारे बुद्धिवादी सांस्कृतिक चेतना से शून्य निरीह प्राणी हैं, किन्तु विदूषकों की भूमिका निबाहने समय-समय पर ये मंच जरूर हथियाते हैं और अपनी लुंज-पुंज अवस्था को ही अपना अलंकरण बताते हुए जनसाधारण को तमाशा दिखलाते हैं। अपनी असमर्थता में इनमें से बहुतों ने तो अपने देश का पुनः खण्ड-खण्ड होना मानसिक रूप से स्वीकार ही कर लिया है क्योंकि इन्हें नहीं लगता कि देश में ऐसा

भी 'कुछ' है जो यह नहीं होने देगा और वह 'कुछ' है—इस देश की माटी से ऊर्जा ग्रहण करता हुआ, राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत, असाधारण जीवटवाला, देवों के लिये भी दुर्लभ, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, डॉ० केशव बलिराम हेडगेवार, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर 'गुरुजी', श्री बालासाहेब देवरस आदि के आदर्शों से अनुप्राणित इस देश का युवक। इस युवक के दर्शन इस संकल्प-अध्याय में भी हुए जब हिन्दुस्थान के कोने-कोने से सर पर कफन बांधकर जान देने का माद्दा लिये हुए अनेक प्रकार के कष्टों का वरण करते हुए यह एक साथ अयोध्या पहुँचा। यदि यह सत्य नहीं है तो संसार में कुछ भी सत्य नहीं है, न सूर्य, न चन्द्र, न दिवा, न रात्रि। और यदि सत्य को देखने का साहस किसी के पास नहीं है, तो ईश्वर उसका भला करे! जान देने का माद्दा भीतर से उगता है, आरोपित नहीं किया जा सकता। यह युवक ही इस देश को एक रख रहा है, एक रखेगा। अंगुली में खून लगा शहीद बनने वालों के मुखौटों को कालचक्र ने उतार फेंका है।

'फिर से बनी अयोध्या योध्या' का शीर्षक हिन्दी के वरिष्ठ कवि श्री जगदीश गुप्त की एक कविता पंक्ति है, जो सूक्ष्म में विराट का संकेत देती है। कविता, संग्रह में मुद्रित है। डॉ० गुप्त का सामयिक उद्घोष देश के लिये प्रेरणास्रोत बना, वे हमारे आदर के अधिकारी हैं। भारतीय मनीषा के सुदृढ़ स्तम्भ डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर ने संग्रह के शुभारम्भ के लिए संस्कृत में कविता की रचना की है, हम उनका नमन करते हैं। हिन्दी के अनेक वरिष्ठ कवियों ने इस संग्रह को गरिमा प्रदान की है, युवा बन्धुओं ने अपने उत्साह को लेखनी दी है, हम सभी का आभार स्वीकार करते हैं। अमर हुतात्मा भ्रातृद्वय कलकत्ता के रामकुमार एवं शरद कोठारी के परिवारजनों—उनके ताऊजी, पिताजी एवं बहन—ने अपनी कविताओं का अर्घ्य इस प्रकाशन को प्रदान किया है, हम उन्हें प्रणाम करते हैं। बीकानेर (राजस्थान) के मूल निवासी हुतात्मा कोठारी बन्धुओं के बलिदान का राजस्थानी के कवियों ने भी यशगान किया है, प्रतीकस्वरूप कुछ राजस्थानी कविताएँ भी संग्रह में प्रकाशित हैं। 'पांचजन्य' के मेधावी सम्पादक श्री तरुण विजय का विशेष सहयोग,

उनका अनेक प्रकाशित-अप्रकाशित कविताओं का उपलब्ध कराना, हमें उनका ऋणी बनाता है। प्रख्यात चिन्तक एवं कवि श्री वचनेश त्रिपाठी के विशेष सहयोग के लिए हम उनके आभारी हैं। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के सभी प्रकाशनों हेतु अथक परिश्रम करने वाले कार्यकर्ता बन्धुद्वय श्री शिवरतन जासू एवं श्री महावीर प्रसाद बजाज का हम आभार स्वीकार करते हैं। प्रकाशन के लिये जिस निष्ठा एवं लगन से डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी ने अपने समय, श्रम एवं शक्ति का नियोजन किया, उसके लिये उनका आभार स्वीकार करना पर्याप्त नहीं होगा। उनके बिना समय की सीमा में आबद्ध यह प्रकाशन असम्भव होता।

पुस्तक की भूमिका के लेखक आचार्य विष्णुकांत शास्त्री हमारे मार्ग-दर्शक एवं बड़े भ्राता हैं। श्रीरामजन्मभूमि यज्ञ में उन्होंने स्वयं अपनी समिधा दी है। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, कलकत्ता विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक होते हुए भी वे एक साधारण कारसेवक की भाँति अयोध्या पहुँचने के उपक्रम में गिरफ्तार हुए, ८० किलोमीटर पैदल चलते हुए ३० अक्टूबर को अयोध्या पहुँचे और कारसेवकों का नेतृत्व किया। उनकी लेखनी अनुभवसिद्ध एवं साक्षात् सत्य का स्वरूप है।

हुतात्माओं की पहली पुण्य तिथि के दिन इस काव्य संग्रह को आपके हाथों में सौंपते हुए हम आश्वस्त हैं कि भारतमाता के वरदपुत्रों का स्नेहाशीष हमें प्राप्त होगा।

कार्तिक कृष्ण ११, संवत् २०४८ — **संपादकद्वय**
दिनांक २ नवम्बर १९९१
कलकत्ता

क्रम

भूमिका		आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री
देश की भाग्य रेखा		सम्पादकद्वय
अयोध्या जयति मोक्षनगरी	१	डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर
तीन कविताएँ /		
तुम्हारे कारनामे	३	डॉ. जगदीश गुप्त
तुम्हारे नाम	४	
सत्य बोलना पाप हो गया	५	
रामजी का मंदिर बनेगा		
धूमधाम से	७	बाबा निर्भयानन्द
सीता देवी को एक		
कारसेवक की चिट्ठी	९	डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव
तीन कविताएँ /		
जख्म ताजे रहें	११	वचनेश त्रिपाठी
फाँसी दो	१२	
मन्दिर ही सदा रहेगा	१३	
मेरे नहीं तुम्हारे हैं	१५	डॉ. शरद रेणु
यह परिवर्तन की आँधी है	१९	शैवाल सत्यार्थी
उस समाज की पुण्य पताका	२१	आचार्य रामनाथ सुमन
आग	२४	डॉ. ल. ज. हर्ष
दो कविताएँ /		
जिनको प्रिय न राम वैदेही	२६	शिव ओम अम्बर
इन्कलाब लिख देंगे	२७	
दो कविताएँ/राम गीत	२८	डॉ अरुण प्रकाश अवस्थी
राममय भारत	३०	
जय श्रीराम	३२	प्राध्यापको वामन:
राम कहो तुम आदर से	३३	कमलेश द्विवेदी
जो भी मंदिर को रोकेगा	३५	बलवीर सिंह 'करुण'
खलनायको !	३७	विमल लाठ

अवध हेतु प्रस्थान करें	४०	ब्रजनन्दन सहाय 'मोहन प्रेमयोगी'
राम - कथा	४१	जनाब जोजिला कोंपर
जहाँ रक्त ने राम लिखा है	४६	डॉ. भगवती प्रसाद चौधरी
रामदूत	४८	रामचन्द्र बिहानी
भारत में राम-राज्य ले आयें	४९	दाऊलाल कोठारी
धर्म-ध्वजा फहरे	५१	हीरालाल कोठारी
ये माला आँसुओं की	५३	पूर्णिमा कोठारी
रामजन्मभूमि मन्दिर : दस चौपाइयाँ	५४	प्रेमनाथ द्विवेदी 'मानस भ्रमर'
लिखी पुनः बलिदान-कहानी	५५	भगीरथ राकेश
प्रताप - प्रतिज्ञा	५७	रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरोध'
मेरे जख्मों का हिस्सा	५९	अनुराधा बनर्जी
जलम भूमि रा दूहा	६१	वस्तीमल सोलंकी 'भीम'
दधीचि सन्तानों के प्रति	६३	कृष्ण मित्र
मन्दिर वहीं बनेगा	६५	महेन्द्र कुमार 'सरल'
अटल संकल्प	६७	सरोज श्रीवास्तव 'नीलम'
इन्हें पहचानिये	६९	ओमप्रकाश पारीक
रामभक्त के बलिदानों से	७१	विष्णु गुप्त 'विजिगीषु'
किसका हिन्दुस्थान है	७६	जगदीश प्रसाद 'स्थापक'
क्योंकि तुम राम हो	७८	संगीता गुप्ता
कीर्ति तुम्हारी अमर रहेगी	८०	जुगलकिशोर जैथलिया
गरज रहा है रोष रे	८२	कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'
जन्मभूमि से राम की पावन ज्योति चली	८३	लाजपत राय 'विकट'
राम नाम के इनकलाब को कोई रोक नहीं सकता है	८६	सुरेश कुमार 'सम्भव'
रामलला की कसम तुम्हें है	८८	रमेश मोरोलिया
राम का निर्वासन क्यों ?	८९	बाबरा शहीद 'बनारसी'
लो घूम गया रथ	९४	कृष्णराव के. दौण्ड
दर्पण है विश्वास सनातन	९५	डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'

अयोध्या जयति मोक्षनगरी

डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर 'प्रज्ञाभारती'

ब्रह्मानन्दकरी अयोध्या,
जयति मोक्षनगरी ॥ध्रु०॥

रामपदाम्बुज चिह्नसुन्दरम् ।
यत्र राजते सरयूतीरम् ।
स्मरणानन्द करी, अयोध्या,
जयति मोक्षनगरी ॥१॥

मुद्रित दशरथसुत-पदनलिनम् ।
यत्र शोभते सरयूपुलिनम् ।
नयनानन्दकरी, अयोध्या,
जयति मोक्षनगरी ॥२॥

कौसल्यात्मजवचनोद्गारम् ।
यत्र पिका अनुगिरन्ति मधुरम् ।
श्रवणानन्दकरी, अयोध्या
जयति मोक्षनगरी ॥३॥

राम-राम-रामेति मधु गिरा ।
यत्र जपन्ति सदा ते कीराः ।
हृदयाह्लादकरी, अयोध्या,
जयति मोक्षनगरी ॥४॥

रामकथाश्रवणार्थमचपलः ।
यत्र साधवो मिलन्ति विमलः ।
काव्यानन्दकरी, अयोध्या,
जयति मोक्षनगरी ॥५॥

राम दर्शनोन्मुदित चेतनाः ।
यत्र सदा नन्दन्ति सज्जनाः ।
दिव्यानन्दकरी, अयोध्या
जयति मोक्षनगरी ॥६॥

डॉ० जगदीश गुप्त की तीन कविताएँ

तुम्हारे कारनामे

चुनाव-सापेक्षता को
धर्म-निरपेक्षता मत कहिए श्रीमन्।
अब कोई नहीं मानेगा तुम्हारी बात
सब जान गये हैं—
तुम्हारे भीतर क्या है
और जुबान पर क्या है।
तुम हत्यारे हो
तुम्हारी राजनीति भी हत्यारी है।
अब तुम बच नहीं पाओगे
क्योंकि अब हमारी बारी है।
तुम्हारे पास क्रूरता है, बर्बरता है, दमन है,
हमारे पास अडिग आत्म-विश्वास है,
अजेय मन है।

तुम्हारे नाम

स्वतन्त्रता संग्राम के बाद
इस बार फिर
इस देश ने
निहत्थों द्वारा
छाती पर गोलियां खाने का
साहस देखा।

उसे भीड़ मत कहो
उसके भीतर है
एक संकल्प
जिसने तुम्हें जड़ से
हिला दिया है।

तुम गौरव के साथ
अपनी करनी को
दोहरा नहीं सकते।
तुम्हारा चेहरा बुझ गया है,
तुम कभी
आंख से आंख मिलाकर
बात नहीं कर सकते।

तुम कितना भी छिपाओ
कितना भी झूठ बोलो,
यह काम तुम्हारे ही हैं
बेशर्म, बेहया वगैरह
यह नाम तुम्हारे ही हैं।

सत्य बोलना पाप हो गया

बर्बरता क्रूरता दमन से
मानवता का अर्थ खो गया।

अखबारों पर पाबंदी थी
सत्य बोलना पाप हो गया।

राजनीति गर्हित है कितनी
राम नाम अपराध बन गया।

परिक्रमा वर्जना हो गयी
चंदन में भी रक्त सन गया।

फिर से बनी अयोध्या योध्या
मंदिर-मस्जिद बैठे पहरे।

फिर से तीर्थ हुआ अपमानित
संगीनों के साये गहरे।

औरंगजेबी युग आ पहुँचा
धर्म-धर्म के ऊपर छाया।

जलियांवाला बाग हेच था
कहर निहत्थों पर यों ढाया।

नहीं रहा आदेश किसी का
फिर भी चलती रही गोलियाँ।

छाती पर बौछारें सहती
एक एक कर गिरी टोलियाँ।

बना रहा संकल्प अंत तक
उठा मनोबल साहस जीता।

राम शक्ति पूजा में तत्पर
मुक्त हो गयी मानो सीता।

रामजी का मंदिर बनेगा धूमधाम से

बाबा निर्भयानन्द

तम्बू भी तनेगा तो तनेगा धूमधाम से।
बम्बू भी लगेगा तो लगेगा धूमधाम से।
युद्ध भी ठनेगा तो ठनेगा धूमधाम से।
पर्व भी मनेगा तो मनेगा धूमधाम से।

हिन्दू जो करेगा वो करेगा धूमधाम से।
रामजी का मन्दिर बनेगा धूमधाम से।
जय जय बजरंगी, हर हर महादेव॥

रामजी करा रहे हैं, रामजी का काम है।
रामजी के काम में काहे का विराम है।
जीवित रहे तो जग जीवन-ललाम है।
मर भी गए तो रहने को स्वर्गधाम है।

हमें तो है काम सिर्फ राम जी के काम से।
रामजी का मन्दिर बनेगा धूमधाम से।
जय जय बजरंगी, हर हर महादेव॥

राजपाट नहीं रहे, राजा की बिसात क्या ?
मंत्रिपद स्थायी नहीं, मंत्री की औकात क्या ?
शाह बुद्धिहीन हुए, बुद्धि हो तो बात करें—
बाबर की, बाबरी की, बाबरों की बात क्या ?

राम भक्त कभी नहीं डरे परिणाम से।
रामजी का मन्दिर बनेगा धूमधाम से।
जय जय बजरंगी, हर हर महादेव ॥

राम ही सकाम है, राम ही निष्काम है।
राम की कृपा से ही ये सारा तामझाम है।
यों तो बलशालियों में सबसे बड़ा राम है।
राम से भी बड़ा बलशाली राम नाम है।

सारे काम धाम होंगे, राम जी के काम से।
राम जी का मन्दिर बनेगा धूमधाम से।
जय जय बजरंगी, हर हर महादेव ॥

राम जी के काम का विरोध जो दिखाएगा।
उसे समझाने को तो राम खुद बुलायेगा।
शासन-दुःशासन, अनुशासन की बात क्या ?
मंदिर का बनना कोई रोक नहीं पायेगा।

अब तो यह काम भी रुकेगा नहीं राम से।
राम जी का मंदिर बनेगा धूमधाम से।
जय जय बजरंगी, हर हर महादेव।

सीता देवी को एक कारसेवक की चिट्ठी

डॉ० शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए,
यह बात आप विश्वनाथजी को कहिए।

लगभग एक साल भोगा है बहुत सुख।
अब कई सालों तक भारी दुख सहिए।
रामजी के बैरियों का होता है यही हाल।
भाग्य में जो लिखा हुआ धीरे-धीरे पढ़िए॥जाहि विधि०॥

शत्रु और मित्र को, जो ठीक नहीं चीन्हते।
उनकी फजीहत से लीजिए नसीहत आप।
कोटि-कोटि जन की भावनाएं तोड़कर।
आप जनतंत्र का मखोल नहीं करिए ॥ जाहि विधि० ॥

★ पटना से भाजपा के तत्कालीन सांसद डॉ० शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव मुजफ्फरपुर केन्द्रीय कारागार में कारसेवक होने के 'जुर्म' में बंदी थे। वहीं से उन्होंने तत्कालीन प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती सीता देवी को यह कविता भेजी।

एक थे वे सीतापति, देव जिन्हें पूजते।
एक आप 'सीतापति' दानवों के देवता॥
एक देश, एक धर्म, एक जाति, एक वंश।
आप हुए ऐसे कैसे, सोचकर कहिए॥
जाहि विधि०॥

लाठी-बल, गोली-बल, सैन्य-बल, दल-छल।
सबको बिफरते, बिलपते तो देखा है न॥
रावण का दर्प भी था चूर हुआ ऐसे ही।
राम-भक्ति-शक्ति को न कमकर तौलिए॥जाहि विधि०॥

राष्ट्र अब जागा है, दैत्य अब भागा है।
इसको जो समझे न, सचमुच अभागा है।
पाप का घड़ा भरा, फूटना है शीघ्र ही।
हो सके तो अभी भी पुण्य जल भरिए॥ जाहि विधि०॥

देश यह अजीब है, पर बड़ा गरीब है।
सदियों से इसको रामधन नसीब है।
कोई हो लुटेरा, चाहे आततायी बर्बर।
इसको न लूट पाया, ठीक से समझिए॥ जाहि विधि०॥

डरिए तो राम से, न शाही इमाम से।
पूछना है, पूछिए—धर्म से ईमान से॥
जाते-जाते बोलिए, अपनी जुबान से।
'राम नाम सत्य है'—ठीक से समझिए॥

जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए।
यह बात आप विश्वनाथ जी से कहिए॥

बचनेश त्रिपाठी की तीन कविताएँ

जख्म ताजे रहें

रास्ते सील कर दिए इन्होंने जो आज,
कल ये खुद भी उन्हीं से गुजरेंगे।

इनकी शक्लों की पहचान कर लेना,
कल ये जरूर कुर्सियों से उतरेंगे॥

जख्म ताजे रहें जो जेल में लगे तुमको,
कल हम इन गोलियों से निपटेंगे।

दमन से कुचले हुए शहर तू उदास न हो,
ये काफिले कल फिर यहीं से निकलेंगे॥

जन्मस्थान को जो आज तुमने घेर लिया,
क्रान्ति के अग्नि-कमल कल यहीं से उभरेंगे।

नाम यहां राम का रहे या बाबर का?
डायरो! जल्द हम इसका जवाब दे लेंगे॥

फांसी दो

मण्डप खोदा शिलान्यास का, खोदी राम-शिलाएँ ।
राम लला की मूर्ति लुप्त की, मुगले-आजम आए ॥
"औजारों से काटा मण्डप", जांच-रपट कहती है ।
रक्त-रंजिता सरयू भी यह व्यथा कथा कहती है ॥
शिलान्यास को तोड़ा-फोड़ा, मूर्ति चुराई प्रभु की ।
मन्दिर भ्रष्ट किए, प्रतिमाएँ पद-दलिता हैं विभु की ॥
वह भी एक मुसलमां, जिसने मन्दिर बनवाया है ।
लाखों रुपए खर्च किए हैं, नाम कमाया है ॥
"चुन्ना" उसका नाम, बरेली में यश छाया है ।
'लक्ष्मी नारायण' का मन्दिर-निर्माण कराया है ॥
लाखों इण्डोनेशी मुस्लिम, 'राम-राम' कहते हैं,
राम-लक्ष्मण को ही वे अपने पुरखे कहते हैं ॥
और एक ये भी हिन्दू, जो राम लला हटवाते ।
तुड़वाते हैं शिलान्यास, सैनिक बल ये अजमाते ॥
लानत दो ऐसे शासन को, करो मलामत इनकी ।
हस्ती बाकी रहे, न सत्ता रहे सलामत इनकी ॥
दीप बुझाए हैं घर-घर के, ये जघन्य हत्यारे ।
फांसी दो चौराहे पर, वे लाशें यही पुकारें ॥

चीख रहा इन्साफ, चीखते आज अंधेरे आंगन।
कहां छिपे हैं खूनी चेहरे ? खूनी जिनका दामन ॥

बलि का खप्पर लिए घूमती, क्रुद्धा आज भवानी।
खुला तीसरा नेत्र, ज्वाल से जलती आज हिमानी ॥

जटा-जूट से नाग खुले, डमरू 'डिम-डिम' बजता है।
शिव प्रलयंकर नृत्य-निरत, फिर मुण्डमाल सजता है ॥

मन्दिर ही सदा रहेगा

आज रात सरयू में बहती, फिर इक लाश मिली है।
बंधी पांव में बोरी जिसके, पुल के पास मिली है ॥
सिर में गहरा जख्म, खाल कुछ उसकी जली मिली है।
होगा 'रामभक्त', कपड़ों में पीली ध्वजा मिली है ॥
'गोली कहीं लगी होगी इसके भी' सब कहते हैं।
बन्द नहीं है खून, लाश के घाव अभी रिसते हैं ॥
डायर कहता, 'यह मत छापो, यह वो लाश नहीं है।'
इस मुर्दे का कुछ भी परिचय इसके पास नहीं है ॥
नए डायरो ! तुम्हें आज हर गली तलाश रही है।
क्रूर जालिमो ! तुमसे हर जिन्दगी हताश रही है ॥
अपनी मौत मरे यदि तुम तो बात नहीं कुछ बनती।
इतनी लाशें गिरीं कि सरयू भी रह-रह सिर धुनती ॥

यहीं कहीं से भगतसिंह-आजाद प्रकट फिर होंगे।
फिर आयेंगे खुदीराम, करतार निकट फिर होंगे॥
विकट रूप प्रतिकारों का, प्रतिशोध पूर्ति पाएगा।
मौत मिलेगी बाबर को, अब नहीं मूर्ति पाएगा॥
ब्रेनगनों, स्टेनगनों का था अम्बार लगाया।
'कारसेवकों' को फिर भी क्या रोक वहाँ पर पाया?
ये शहीद बलिदानों से इतिहास नया सिरजेंगे।
इन्हीं चिताओं से भारत में क्रान्ति-कमल उपजेंगे॥
'रामलला' की 'जन्मभूमि' पर मन्दिर पुनः बनेगा।
मस्जिद होगी नहीं, वहां फिर भगवा ध्वज फहरेगा॥
दमनकारियों का दल निज करनी पर पछताएगा।
डायर अपने पापों का जल्दी ही फल पाएगा।
रामरथों की विजय पताका सभी ओर फहरेगी।
हिन्दू लहर देश के कोने-कोने से लहरेगी॥
'सात जन्म' क्या इसी जन्म में हिन्दू राष्ट्र बनेगा।
दुर्योधन के दुः से फिर अंधा धृतराष्ट्र दहेगा॥
कहता है जो आज जमाना, आगे वही कहेगा।
'जन्मभूमि' पर मन्दिर था, मन्दिर ही सदा रहेगा॥

मेरे नहीं तुम्हारे हैं

डॉ० शरद रेणु

एक माता से पूछा था
उस पावन अयोध्या की
रक्त-रंजित माटी ने
सरयू की धारा ने
गोली लगी प्राचीरों ने
इधर-उधर-फटे पड़े वस्त्रों ने
क्षत-विक्षत शवों ने
क्यों आई हो ?

गोद में कौन सा बेटा ऽ लाई हो ?
छोटा ऽ ऽ या बड़ा
या दोनों को देने आयी हो ?

सौगन्ध राम की खा करके
क्या सोचा ? क्या विचारा ?
मस्तक पर रोचन लगा
किसे विदाई दोगी ?
बोलो ऽ ऽ माता !
ममता का सजीव खिलौना
अपना प्यारा छौना
देकर ऽ ऽ
क्या ? ·····फिर
तुम पा ऽ ऽ लोगी ?

माता ने झुककर
रक्त-रंजित माटी को
लगा लिया हृदय से
ओह ऽ ऽ मेरा बेटा मिल गया
देखो ऽ ऽ धरती माँ !
मेरे वात्सल्य का दीपक
फिर जल गया।
ममता को हृदय से लगा
उस माता की आंखें छलकीं
देखो, राम के द्वार पर
रोते-रोते बंध गयो हिलकी।

हृदय की हूक ने
अंतर्मन हिला दिया
दहाड़ मार, पछाड़ खाकर

भूमि पर गिर गयी
कहाँ-कहाँ सोये थे मेरे वीर पुत्र
सिंह-शावक—नरशार्दूल।

ओ ऽ ऽ अयोध्या की धरती
जल्दी बता
सरयू की धारा तुम ही कहो
कौन सा 'विनोद', वासुदेव
सोया तेरी कोख में ?
ओ ऽ ऽ ऊँची प्राचीरों तुम्हीं कहो
कितने देखे मेरे 'महावीर'
लहू के वस्त्र पहने ?
बन्दूक की गोली रूपी पुष्पों की
वर्षा सहते, 'राम-राम' कहते
इसी जमीं पर सो गये
भव्य राम-मंदिर की नींव के
स्वर्णिम पत्थर हो गये।

रोती माता ने पूछा-सन्तों से
आते-जाते हर जन-जन से
बता मेरा 'राजेन्द्र' कहाँ ?
है 'राम' कहाँ ऽ ऽ वो 'शरद' कहाँ ?
रोते-रोते हँस गयी माँ ऽ ऽ
धरती माता से यूं बोली
माँ ऽ ऽ खाली नहीं
भरी है, मेरी ये झोली।

एक नहीं हजार पुत्र लायी हूँ
ये मेरे नहीं तुम्हारे हैं
सौगन्ध राम की खाती हूँ
मुझसे ज्यादा ऽ ऽ हे धरती माँ ऽ ऽ !
ये तुमको एवं तुम्हारे मस्तक-मणि
श्री राम को प्यारे हैं।

यह परिवर्तन की आंधी है

शैवाल सत्यार्थी

यह परिवर्तन की आंधी है
तूफानों ने भी इसकी सीमा नहीं बांधी है
हिन्दू अब जागा है
सदियों से गहराता अंधकार भागा है
सारी परिभाषाएं बदली हैं
संस्कृति ने करवट बदली है
परिवेश बदला है/संभावनाएं बदली हैं
बहुत सह चुका/सहिष्णु रह चुका
अब न सहेगा/भावुकता में अब न बहेगा
अब ईंट का उत्तर पत्थर से देगा !
रक्त की एक-एक बूंद का हिसाब लेगा !!
ओ 'इटावे के शकुनि' ! सुन ले—
अब एक और महाभारत होगा !!!

चंगेज/नादिर/गोरी गजनवी
और बाबर को—
उनके ही जुल्मों की कब्रों में गाड़ा गया होता !
काश ! हिन्दू विभाजित
सहिष्णु, अति मानवीय न होता !!
अब भाषा बदली है
परिभाषा बदली है
हिन्दुत्व अब जागा है—
पहले 'लखनऊ के रावण' को सबक सिखा ले
फिर विदेशी आक्रान्ताओं को सिखाएगा !
रामराज्य का चिर-अभिलषित स्वप्न—
साकार कर दिखाएगा !!

बढ़ चुका बहुत आगे अब
रथ परिवर्तन का—
गीदड़-भभकियों से अवरुद्ध नहीं होगा !
है राम-भक्तों का पड़ाव हर मंजिल पर
अब मन्दिर-निर्माण-संकल्प—
अवरुद्ध नहीं होगा !!
अवरुद्ध नहीं होगा !!!

उस समाज की पुण्य पताका फर फर फहराती है

आचार्य रामनाथ सुमन,

जिस समाज में शुभ कर्मों का अभिनन्दन होता है।
वन्दनीय पावन पुरुषों का पदवन्दन होता है॥
जहाँ त्याग-तप बलिदानों को श्रद्धा दी जाती है।
जहाँ हुतात्मा नरवीरों की, पूजा की जाती है॥
उस समाज की पुण्य-पताका फर फर फहराती है।
उसकी यश-गंगा आंगन-आंगन में लहराती है॥
वह समाज अनुपम रत्नों की खान हुआ करता है।
वहाँ शक्ति का परिचायक बलिदान हुआ करता है॥
मैं पहले ऐसे समाज का अभिनन्दन करता हूँ।
फिर अपने युग के दधीचियों का वन्दन करता हूँ॥
युगों-युगों तक गेय रहेगी इनकी अमर कहानी।
ले अदम्य उत्साह लक्ष्य तक पहुंचे ये बलिदानी॥

जहाँ परिन्दा भी पर मार न पायेगा यह प्रण था।
जहाँ ज्योति को ढंकने वाला घिरा घिनौना घन था॥
वहीं विजय का ध्वज फहराने ये ही वीर बढ़े थे।
हिन्दु शक्ति का बोध कराने ये ही शिखर चढ़े थे॥

इन शूरों ने शोणित से प्रभु का अभिषेक किया था।
प्राणों के निर्भीक समर्पण का अतिरेक किया था॥
इनके तन की भस्म शम्भु का अंगराग आभूषण।
इनका अस्थि-समूह धवल यश का उपमान विलक्षण॥

अस्थि कलश ये वीरों के उन बलिदानों के स्मारक।
जिनके कारण हिन्दु जाति का आज समुन्नत मस्तक॥
जग ने जान लिया हिन्दू के संकल्पों में बल है।
संकल्पों के आगे पशुबल हो जाता निर्बल है॥

शताब्दियों के पराभवों से स्वाभिमान सोया था।
प्रांत, जाति पन्थों ने हिन्दू-ऐक्यभाव खोया था॥
सोये स्वाभिमान को खोये ऐक्यभाव को फिर से।
अस्थि कलश ये प्राप्त कराने आये अवध अजिर से॥

इन कलशों से जुड़ी हुई है गाथा सन्तापों की।
अत्याचारी क्रूर निरंकुश शासन के पापों की॥
नर पिशाच ने वह पैशाचिक नरसंहार कराया।
जिसे न नादिरशाह न जालिम डायर भी कर पाया॥

माथे का सिन्दूर गोद का लाल बहिन का भाई।
बच्चों का संरक्षक छिनता देख शर्म शरमाई॥
मठों मन्दिरों में बैठे भक्तों पर चली दुनाली।
बहता रक्त बताता था यम की करतूतें काली॥

काली करतूतों का संहर्ता हिन्दू अब जागा।
अपमानों को सहने वाला मोह तमस अब भागा॥
अब रण में बजरंग बली के रणबाँकुरे डटेंगे।
मन्दिर के निर्माण मार्ग के सब अवरोध हटेंगे॥

अब राघव की जन्मभूमि पर मन्दिर भव्य बनेगा।
जग के आँगन में हिन्दू का कीर्तिवितान तनेगा॥
हर हर महादेव की ध्वनि से दहलेगा दानव दल।
राम-लला के जयघोषों से गूंजेगा नभ-भूतल॥

आग

डॉ० ल० ज० हर्ष

भारतवासी भूल न जाना सरयू तट पर जली चिताएँ ।
आग संजोकर मन में रखना बलिदानों की अमर कथाएँ ।

अभिमन्यु का वीर व्रतीदल चक्रव्यूह को चीर बढ़ा था ।
रामलला के दर्शन करके हर्ष भाव में झूम उठा था ॥
जयनादों से नभ गूंजा था गुम्बज पर भगवा फहराया ।
कौरव दल की क्रूर योजना शासन सेना बल इतराया ॥
गोली के बन गये निशाने, विजय कथा वे सुना न पाये ॥ आग···

बल बजरंगी भक्ति राम की सेवा का क्रम नहीं रुका था ।
लाठी बरसी आँखें बहतीं, साहस पौरुष नहीं झुका था ॥
सांय सांय गोली से भूना पल में हाहाकार मचा था ।
इन्सानों से हैवानों का शैतानी गृह युद्ध छिड़ा था ॥
किसने ? किसका ? लहू बहाया, पूछ रही शोणित धाराएँ ॥आग···

कौनसा अपराध उनका राम नामी ओढ़ ली थी।
राम का दरबार गूंजा राम की धुन बढ़ चली थी॥
लाल कर दी पुण्य धरती चल पड़ा किसका इशारा।
गम भरे थे देशवासी विकल था सरयू किनारा॥
कार सेवा में चढ़ा दीं, प्राणों की आधार शिलाएं॥ आग···

अब तक ये परदेशी हमले आज स्वदेशी वार पड़ा है।
रामभक्ति पर गहरी चोट कैसा यह दुर्भाग्य खड़ा है॥
मानबिंदु की रक्षा करने अपने जीवन दीप बुझाये।
उन वीरों के अस्थिकलश पर हमने केवल सुमन चढ़ाये॥
लक्ष्य प्राप्ति तक बढ़ते जाना, कहती हैं गुमनाम व्यथाएं॥ आग···

उधमसिंह का धीरज निश्चय जलियांवाला बाग न भूला।
अपमानों का बदला लेकर फांसी के फंदे पर झूला॥
बीस बरस तक रखी हृदय में प्रतिशोधों की धधकी ज्वाला
कांप उठी अंग्रेजी सत्ता अंधकार में किया उजाला॥
उत्प्रेरक हमको बन जायें, अवधपुरी की ये घटनायें॥ आग···

शिव ओम अम्बर की दो कविताएँ

जिनको प्रिय न राम वैदेही

नित्य-मुक्तिदापुरी अयोध्या में बलिपर्व मनायेंगे,
है सौगन्ध राम की हमको मन्दिर वहीं बनायेंगे।

कहा संत तुलसी ने जिनको
प्रिय न राम वैदेही हों,
कोटि शत्रुसम त्यागो उनको
चाहे परम सनेही हों।
हर नाते-रिश्ते को इसी कसौटी पे कसवायेंगे,
है सौगंध राम की हमको मन्दिर वहीं बनायेंगे।

जो सम्बन्ध यहां बाबर से
जोड़ रहे उनसे कह दो,
जो तारीखी सच को तोड़,
मरोड़ रहे उनसे कह दो।
दाग गुलामी के माथे पे और नहीं सह पायेंगे,
है सौगन्ध राम की हमको मन्दिर वहीं बनायेंगे।

संकल्पों की शंख ध्वनि से
गुंजित दसो दिशाएं हैं।
राम शिलाएं नहीं, राष्ट्र की
ये आधार शिलाएं हैं।
अगर जरूरत पड़ी रक्त का अविरल अर्घ्य चढ़ायेंगे।
है सौगन्ध राम की हमको मन्दिर वहीं बनायेंगे।

इंकलाब लिख देंगे

हम विप्लव के नये कायदों की किताब लिख देंगे
सर्द जमीं पे गर्म लहू से इंकलाब लिख देंगे।

आर्य भूमि के बच्चे-बच्चे का संकल्प कहेगा
मन्दिर तोड़ बना जो ढांचा कायम नहीं रहेगा।
समझौतों के शब्दजाल में अब न हमें उलझाओ
सिंहनाद कर उठे शौर्य को मत लोरियां सुनाओ
राष्ट्र पुरुष है राम-तथ्य जिसको स्वीकार नहीं है
भरत भूमि में रहने का उसको अधिकार नहीं है।

डॉ० अरुण प्रकाश अवस्थी की दो कविताएं

रामगीत

न गोरी रहा है, न बाबर रहा है
मगर राम युग युग उजागर रहा है।
किया राम से द्रोह जिसने कभी भी
वही बस जहां में निशाचर रहा है॥

जहाँ रामजी हैं अयोध्या वहीं है
प्रभा संग जैसे प्रभाकर रहा है।
जहाँ चाँदनी है वहीं चन्द्रमा है
दिवा संग जैसे दिवाकर रहा है॥

राम हमारी शान हैं
राम हमारी आन हैं।
सचमुच रघुवर राम बन गए
अपनी हर पहचान हैं॥

राम मुक्ति सोपान हैं
गीता के युग-गान हैं।
युग-युग से श्रीराम स्वयं में
पूरा हिन्दुस्थान हैं॥

राम हमारी सांस हैं
राम अटल विश्वास हैं।
हिन्दु जाति का राम बन गये
एक अमर इतिहास हैं॥

राम श्लोक हैं गीत हैं
संस्कृति के संगीत हैं।
धरती की चेतना और
जीवन की अमर प्रतीति हैं॥

राम हमारी वंदना
राम हमारी अर्चना।
राम बिना जीवन की अपने
सूनी है हर अल्पना॥

करो राम का काम अब
लेना नहीं विराम अब।
राम काज कीन्हें बिनु भाई
कैसा है विश्राम अब॥

होवें लाख प्रहार अब
पर लेना अधिकार अब।
काम राम के आ न सके
तो जीना है धिक्कार अब॥

यह धरती है राम की
सीतापति छविधाम की।
राम बिना आराम कहाँ
जय बोलो श्रीराम की॥

राममय भारत

जिन्हें राम का नाम न भाए
गीत राम के कभी न गाएँ
उसके लिए कहीं भारत में अब न रहेगा स्थान।
नहीं कह रहा केवल मैं, यह कहता हिन्दुस्थान॥

राम गीत हैं राम श्लोक हैं
राम निशा में दिवालोक हैं
रोम-रोम में रमे राम हैं और राम में रमे लोक हैं।
राम हमारी अमर अस्मिता भारत की पहचान॥

भारत का इतिहास राम हैं
भारत का विश्वास राम हैं
इस चन्दन वदना माटी के श्रद्धामय उल्लास राम हैं।
कहता हाथ उठा यह जन-गण सुनले सकल जहान॥

जिन्हें राम से प्यार नहीं है
उनमें कोई सार नहीं है
ऐसों को भारत में रहने का कोई अधिकार नहीं है।
यही घोष अम्बर तक करता शीश उठा हिमवान ॥

जो विदेश से नेह लगाते
बनकर नाग जहर फैलाते
और स्वयं को बर्बर डाकू बाबर का वंशज बतलाते।
ऐसों के हित करना है जन्मेजय सा अभियान ॥

आज अयोध्या बोल रही है
परत दर्द के खोल रही है
राम वंशजों के साहस विक्रम पौरुष को तोल रही है।
कितना अभी हमें सहना है घोर जाति-अपमान ॥

नहीं राम से अलग अयोध्या
अविजित रघु की सुभग अयोध्या
वही तपः पूतों की नगरी सुलग रही है आज अयोध्या।
साक्षी राम-जन्म-भू के हैं सारे वेद पुरान ॥

बढ़ो अभी आखिरी समर है
प्रण रघुवर का हुआ मुखर है
'निश्चर हीन करो महि सारी' गूँजा आज पुनः वह स्वर है।
राम काज के लिए बढ़ो अब जाये भले ही प्राण ॥

जय श्रीराम

प्राध्यापको वामनः

हिंदुशक्तिसमुद्भूतौ कोठारी कुलजौ सुतौ ॥
रामश्च शरदश्चेतौ रामस्य शरणं गतौ ॥१॥

वीरमाता वीरतातः वीर भगिनीच आगताः ॥
वयं सर्वेऽत्र न भ्रास्मः भवतां दर्शनेन च ॥२॥

अनेके शूरवीरास्ते कारसेवा व्रतोद्यताः ॥
राम मंदिर निर्माणं सेव श्रद्धांजलिर्भवेत ॥३॥

राम कहो तुम आदर से

कमलेश द्विवेदी

चाहे जितनी रिश्तेदारी रक्खो अपने बाबर से ।
यदि भारत में रहना है तो राम कहो तुम आदर से ॥

राम यहां कण-कण में बसते
रोम-रोम में रमते हैं ।
राम नाम पर हम न्योछावर
जीवन भी कर सकते हैं ।
गांव-शहर ही नहीं आज यह बात उठी है घर-घर से ।
यदि भारत में रहना है तो राम कहो तुम आदर से ॥

लाठी-गोली के आगे भी
कभी न हम झुक पायेंगे।
जहाँ राम की जन्मभूमि है
मन्दिर वहीं बनायेंगे।
परिचय तो हो गया तुम्हारा आज हमारे तेवर से।
यदि भारत में रहना है तो राम कहो तुम आदर से॥

आन्दोलन यह नहीं रुकेगा
इसको और बढ़ाना है
हमें अयोध्या, काशी, मथुरा
सबको मुक्त कराना है।
तुमने ईंट उठाई तो हम उत्तर देंगे पत्थर से।
यदि भारत में रहना है तो राम कहो तुम आदर से॥

जो भी मन्दिर को रोकेगा

बलवीरसिंह 'करुण'

हमने तो तुमको श्रद्धा से, "जय सियाराम" की बोली दी
लेकिन तुमने तो बदले में, हमको हत्यारी गोली दी
इसलिये बदलते तेवर से, यह युद्ध लड़ा अब जायेगा
जो भी मन्दिर को रोकेगा, वह सीधा यमपुर जायेगा ॥

कायर डायर के फायर से, घायल भारत माँ का सीना,
जलियांवाला में हुआ और, विष घूँट पड़ा हमको पीना,
लेकिन तब भी तो ऊधमसिंह उड़ सात समुन्दर पार गया
जालिम डायर की छाती में, गोली का डंक उतार गया,

तुम तो दुबके हो आसपास, बोलो कब तक बच पाओगे,
बकरी के बेटों प्राणों की, तुम कब तक खैर मनाओगे,
जल्दी ही कोई बजरंगी, तुम तक भी आ ही जायेगा।
जो भी मन्दिर को रोकेगा, वह सीधा यमपुर जायेगा॥

तब शान्ति मन्त्र जपते आये, अब क्रान्ति जगाते आयेंगे,
ज्वालामुखियों के तेवर ले, अम्बर दहलाते आयेंगे,
सूनी माँगों, उजड़ी गोदों का कर्ज चुकाने आयेंगे,
हम अवधपुरी के पग-पग पर, भगवा झंडा लहरायेंगे,
हे राम लला विश्वास रखो, हम आयेंगे, हम आयेंगे,
है कसम लखन के बाणों की, हम मन्दिर वहीं बनायेंगे
जो रक्त बहा सरयू तट पर, वह व्यर्थ नहीं जा पायेगा।
जो भी मन्दिर को रोकेगा, वह सीधा यमपुर जायेगा॥

खलनायको !

विमल लाठ

क्या तुमने समझ लिया
यह ताश का खेल है
काट निकाली हत्था मार लिया
हारा हुआ अपने घर हो लिया ?

क्या तुमने समझ लिया
बाबर आका है तुम्हारा
मीर बाकी बन बैठे तुम
तोपों से मन्दिर ढहा दिया ?

क्या तुमने समझ लिया
मुगलिया सल्तनत है दिल्ली पे
खौलते कड़ाहों में डलवा दिया
चिनवा दिया जिन्दा दीवारों में ?

क्या तुमने समझ लिया
गुलाम देश है फिरंगी का
डायर की बंदूकें बनकर
बाग को श्मशान बना डाला ?

मियाँ ! और जितने मियाँ हो तुम !!
जितने रूप हैं मुखौटे हैं तुम्हारे
मुलायम हो कि लल्लू हो कि वी पी हो
मधुकर हो मुल्लर हो कि हुसैनी हो
लोगों साये में दुबके सफेद टोपीवाले हो
या विदेशी टट्टू हंसिया हथौड़ी वाले हो
इस बार पारी तुम्हारी रणचण्डा से है
दुर्गा मां भवानी काली कराली से है
जिसके सपूतों का तुमने लहू बहाया है
उस ताण्डव वाले त्रिनेत्री कपाली से है
जिसकी बाँसुरी को तुमने छीना है
उस चक्र सुदर्शन वाले त्रिपुरारि से है।

अब तक तुमने जो भी समझा हो
खलनायको ! अब समझ लो !!

सरयू के शोणित ने धो दिये
तुम्हारे विद्रूपक बने लिपे पुते चेहरे
अयोध्या में जिन लाड़लों ने शहादत दी है
मेरे देश की भाग्य रेखा बदल दी है।

रामलला का जयघोष
भारतमाता की आरती है
करोड़ों कंठों की एक आवाज
अरिदमन राम को पुकारती है
बलिदानी परम्परा तो युग युग से
मेरी मातृभू की पवित्र थाती है।

अवध हेतु प्रस्थान करें

ब्रजनन्दन सहाय 'मोहन प्रेमयोगी'

कोटि-कोटि विक्रमी भक्तगण अवध हेतु प्रस्थान करें।
रामलला की जन्मभूमि के मन्दिर का निर्माण करें॥

राम भक्त का पथ जो रोके ऐसा कोई वीर नहीं।
रामबाण के सन्मुख आये ऐसा कोई तीर नहीं।
सियाराम के भक्त पवन सुत का आओ फिर ध्यान करें॥

कोटि-कोटि कर से निर्मित हो जन्म-भूमि मन्दिर सुन्दर,
ईंट-ईंट में राम नाम के अंकित हों दीपित अक्षर।
वास्तु-कला के कीर्तिमान का अक्षय शिल्प विधान करें॥

तोरण ध्वज मरकत माणिक के मणिमय कलश विमान रचें,
चहुँ दिश पारिजात पुष्पों का स्वर्गोपम उद्यान रचें।
भित्ती खम्भ, गच, देह-द्वार को मणिमय ज्योतिर्मान करें॥

कोटि-कोटि केसरिया ध्वज से, लहरा दें अवनी अम्बर,
दिग-दिगन्त में गूँज उठे फिर वीरों का जयनाद प्रखर।
कोटि-कोटि शंखध्वनि में फिर आओ मंगलगान करें॥

राम-कथा

जनाब जोजिला कॉपर

वे कहते हैं 'राम' मिथ है
किसी शायर का खयाली पुलाव है।
फसाना अच्छा है, मगर दिल बहलाने तक
ख्वाब ख्वाब होते हैं, असलियत नहीं
हकीकत नहीं।

वे फरमाते हैं यह फसाने की 'अजुधिया' नहीं
सिफ धरम के ठेकेदारों का छलावा है,
हां, मुमकिन है यह 'साकेत' रही हो
मुमकिन है यहाँ कभी गौतम बुध ठहरे हों,
मुमकिन है यहाँ कभी जैनियों के कोई गुरू रहे हों
मगर अनुमान ही अनुमान है
प्रत्यक्ष तो नाम को प्रमान है।

---

*नार्थ पोल

[कवि व्यंग्य विधा में साहित्य सर्जन करते हैं, यह कविता उसीका एक दर्पण है]

अरे भाई, जिन्होंने जमीन को खोदकर देखा है,
इतिहास तवारीख का गौर से जायजा लिया है
उनकी काबिल राय में—
(और सबको माननी भी चाहिये उनकी बात)
यहाँ कभी अयोध्या थी ही नहीं
एक भी तो सबूत नहीं—एक भी सबूत नहीं
अगर दुनियाँ में कभी कोई अयोध्या थी भी
तो वह थाई देश में थी
लरकाना बस्तर या हिमालय की वादी में थी
घघ्घर के किनारे कहाँ खोजते हो ?

एक बाल्मीकि ने बात का बतंगड़ बनाया था
चंबलवासी अंत्यज थे न—
इसी से एक किस्सा गढ़ डाला था
छत्री के बेटे से बाम्हन राजा को मरवाया था।
केवट, निषाद, भिलनी बंदर-भालू को
सवर्ण आर्यों के माथे पर बिठलाया था
औकात बतायी थी ऊँचे लोगों को
कि इनकी मदद के बिना
तुम्हारा 'रामराज' बन नहीं सकता—(कितनी सच बात थी)
बहुत दिन तक यह बाम्हनों का राज चल नहीं सकता।

उस भले आदमी ने एक फसाना लिखा,
एक दास्तां लिखी
और इधर यारों ने बेपर की उड़ायी—
'फैजाबाद' में हो गयी रामजी की पैदाइश !!

फैजाबाद
केवड़े का जंगल
नवाबों, रईसों का शहर
अजीमुश्शान नगीने सी नगरी
जंगल में मंगल मनाने
गरीबपरवर हुजूर नवाब साहब के
इशारे पर उतरी !
और ये कमजर्फ पराये चूल्हे पर अपनी रोटियाँ सेंकने लगे,
अजीबो गरीब किस्से गढ़ने लगे,
शहरे फैज को अयोध्या कहने लगे !

कमाल है भाई—
अरे यहाँ नवाब सआदत खाँ
इनायत फरमाते थे—
मोमिनों के आराम के लिये उनने
एक 'कर्बला' बनवाई थी—
यहाँ दफन होनेवालों को इमदाद दिलायी थी
यहाँ सोनेवालों को खुदा की निगाहे करम मिली थी !

मगर देखिये तो—
हमलावर काफिरों के
काफिलों ने—
पाक सरजमीं पर कब्जा जमाया
सरकारी इमले पर अपना हक जताया
दीन हीन की तो बात छोड़िये
मुर्दों पर भी इन्हें रहम न आया

हद कर दी रमायन के हर चरित्तर का
(मजारों-मस्जिदों को तोड़कर)
कदम कदम पर मंदर बनाया—
हर जगह अपना टिटिम्मा खड़ा कर दिया
अच्छी खासी 'कर्बला' को राम का शहर कह दिया !

कितने मेहरबान थे,
रय्यत का दिल रखनेवाले
गरीब परवर नवाबों ने
आपकी ज्यादती भी अनदेखी की,
आपकी जिद रख ली !
आपके दरों को तीरथ का दरजा दिया !
आपको उजाड़ा नहीं, बसने दिया, रहने दिया !
अब इसका मतलब यों तो नहीं था—
आप सीना जोरी करें ?
दूसरों के इबादतखाने गिरायें ?
जहाँ चाहे मुँह मारें, मन्दिर बनायें ?
दिल पर हाथ रखकर बताइये—
हमने कभी आपका एक भी मन्दिर गिराया ?
(इतिहासकार कहते हैं नहीं)
हमने कभी आपके बुत को सताया ?
(इतिहासकार कहते हैं कि नहीं)
(गो कि हमें इसका हक हासिल था—)
तब क्यों हमारे सिर चढ़े आते हैं ?
फालतू बातें बनाकर बेपर की उड़ाते हैं ?

हमारी नहीं सुनते, न सुनें—
अपनी चुनी सरकार की सुनें—
कानून की, आलिमों की बात सुनें
क्यों आँख के रहते अंधे बने जाते हैं ?
हम समझा बुझा के थक चुके हैं,
अब बहुत हुआ—खैर मनाइये
शराफत से अपने रथ पर बैठ जाइये !
अपने घर★ तशरीफ ले जाइये !
जो यहाँ सो रहे हैं हमारे अजीज,
खुदा के लिये उन्हें न जगाइये,
नहीं तो कहर बरपा होगा।

जहां रक्त ने राम लिखा है

डॉ० भगवती प्रसाद चौधरी

फिर पुकारा अस्मिताने लोही तिलक लगाना है।
जहां रक्त ने राम लिखा है, उसी अयोध्या जाना है॥

जहां गोलियां हार गयी, हारा शासक हत्यारा।
जहां दर्प बाबर का टूटा, वही शौर्य की धारा॥
चलो साथियों बढ़ो साथियों मन्दिर वहीं बनाना है।
जहां रक्त ने···

केशरिया की आन जहां, राम-शरद से सैनानी।
नतमस्तक इतिहास हो गया, धरती का हर बलिदानी॥
सपने जिनके आज अधूरे पूरे कर दिखलाना है।
जहां रक्त ने···

जहाँ सैकड़ों मांग धुली, ममता ने गोली खाई।
जहाँ हजारों राखी रोयी, उमड़ी उर तरुणाई॥
वहीं जवानी की ज्वाला से मिटता दाग मिटाना है।
जहां रक्त ने···

जहाँ सुमन से शीश चढ़े, रामलला की आन जहाँ।
वहीं ध्वजा लहराये नभ तक, मर्यादा का मान जहाँ॥
हवन कुण्ड धधका श्रद्धा का, सारा पाप जलाना है।
जहां रक्त ने···

रामदूत

रामचन्द्र बिहानी

हीरालाल जी दो जाया, दोनूं बड़ा सपूत
कार सेवा में जायकर, बण्या राम का दूत

सुमित्रा का कंवर लाडला, 'शरद' और 'राम'
राम सेवा के कारणे, पहुँच्या साकेत धाम

भगवो झंडो ले हाथ में, गुम्बद चढ़िया जाय
दुनियां देखत ही रही, झंडो दियो फहराय

दो दिनां के बाद में, पुलिस गई घबराय
ले बन्दूकां हाथ में, घर स्यूं काढ़या जाय

दुष्ट केवूं के पापी केवूं, गोली मारी थारे
राम वां रो वंश नाश करै, कोई नै रेवै लारै

विमान ले पार्षद आया, बोल्या 'जै श्रीराम'
विमान चढ़ दोनूं वानें, लेग्या साकेत धाम

स्वागत करण राम उठ्या, गोदी लिया बैठाय
दे आशीष प्रेम स्यूं, अमर दिया बणाय

चन्द्र बिहानी यूं कहे, सुन मेरे भगवान
इस्या भक्त जन्मै समाज में, जद होवै कल्याण

भारत में राम-राज्य ले आयें

दाऊलाल कोठारी

ये बलिदान, ये जीवन, हमें जीने की राह सिखाये,
राष्ट्र-कार्य सबसे ऊपर यह संदेश सुनाये ॥

राम ने जब आह्वान किया
घर घर राम-शरद ने कहा
चलो साथियों ! भारत में राम-राज्य ले आयें ॥

माता ने मंगल-तिलक किया
पिता ने शुभ आशीष दिया
जाओ पुत्र, अब तुमसे राम, जो चाहें सो करायें ॥

लेखक अमर शहीद कोठारी बन्धुओं के ताऊजी हैं। उनकी अन्त्येष्टि अयोध्या में इन्होंने ही जाकर की।

नब्बे के अक्टूबर की तीस को, मंदिर पर भगवा फहराया
झकझोरा सोये हिन्दू को, प्राणों से उसका मूल्य चुकाया
रक्त ये व्यर्थ न जायेगा
भगवा ध्वज लहरायेगा
मन्दिर वहीं बनायेंगे, राम की सौगन्ध खायें ॥

याद रखेगा देश सदा
संघ, स्वजन, पितु, मातु, सखा
क्रुद्ध हिन्दु लेगा बदला, भले लहू टकराये ॥

नहीं याचना रण होगा
संग्राम बड़ा भीषण होगा
तीन नहीं अब तीस हजार, लेंगे जो हो जाये ॥

धर्म-ध्वजा फहरे

हीरालाल कोठारी

गौरव से परिपूर्ण रहा है, सोने की चिड़िया भी रहा है।
राम, कृष्ण, प्रताप, शिवाजी, राम-शरद का शौर्य यहाँ है॥
धर्म ध्वजा फहरे॥

बाबर से पहचान नहीं है, भारत की वह शान नहीं है।
इक पुरुषोत्तम, एक है योगी, राम-कृष्ण से आन यहीं है॥
धर्म ध्वजा फहरे॥

चारों तरफ कोहराम मचा है, राम यहाँ बदनाम हुआ है।
कौन ? कहाँ ? कब ? आया घरा पर, मुश्किल में इतिहास पड़ा है॥
धर्म ध्वजा फहरे॥

रचनाकार अमर शहीद कोठारी बन्धुओं के पिता हैं।

अवध बनी है वध की वेदी, निर्दोषों के रक्त से खेली
जाने कैसी है यह होली, सरयू की धारा भी रो ली ॥
धर्म ध्वजा फहरे ॥

हिन्दू-हिन्दी का झगड़ा ना, हिन्दू-मुसलमां का रगड़ा है।
राष्ट्र एक और एक ही जन हैं, राष्ट्र-धर्म की माँग यही है ॥
धर्म ध्वजा फहरे ॥

रामायण का राम कहाँ है, दुष्ट-दलन घनश्याम कहाँ है।
राज छोड़ वन-उपवन भटके, महाभारत का कृष्ण कहाँ है ॥
धर्म ध्वजा फहरे ॥

लक्ष्य एक है राम-राज्य का, हृदय में आदर्श राम का।
विनय नहीं जो काम आयी तो, शौर्य देखना 'जय श्रीराम' का ॥
धर्म ध्वजा फहरे ॥

धर्म-सनातन पुनः जगा दे, भगवा-पताका फिर फहरा दे।
राम-कृष्ण सा कोई अवतारी, हिन्दू-राष्ट्र का मान बढ़ा दे ॥
धर्म ध्वजा फहरे ॥

ये माला आंसुओं की

पूर्णिमा कोठारी

ये माला आंसुओं की ले लो
कर दो उन वीरों पर अर्पण
प्रतिष्ठा राम जन्मभूमि हेतु
किया जिन्होंने प्राण समर्पण।

क्रूर काल के कुटिल हाथ जो
इस माला को बिखराना चाहें
कोई उसे बतला दे जाकर
धागा अति मजबूत वे पावें।

आंसू यादों की प्रतिच्छाया है
यादों को कोई न भूल पाया है
व्यर्थ काल की चेष्टा और चुनौती
बस, मन थोड़ा शंकित हो आया है।

पर, विश्वस्त हूं यादें कभी साथ न छोड़ेंगी
मृत्यु भले ही आ मेरा रुख जोड़ेगी
आंसू और यादें अटूट है रिश्ता इनका
कोई शक्ति नहीं मेरी माला तोड़ेगी।

(यह भावांजलि शहीद कोठारी बन्धुओं की बहन की है।)

रामजन्मभूमि मन्दिर : दस चौपाइयाँ

प्रेमनाथ द्विवेदी 'मानस भ्रमर'

जस-जस शासन कीन्ह कड़ाई। तस-तस हिन्दुन शक्ति बढ़ाई॥
मन्दिर केर संकलप ठाना। सबहि अयोध्या कीन्ह पयाना॥
अनगिन बन्धन गये लगाये। कारसेवकन्ह सबहिं ढहाये॥
लाठी-गोली रोकि न पाई। जनम भूमि सब पहुँचे जाई॥
मन्दिर पर अधिकार जमावा। गुम्बद पर झंडा फहिरावा॥
फिर सेना जो कीन्ह सहारा। बरनि न जाय सारदा द्वारा॥
अनगिन केर प्रान हरि लीन्हा। अनगिन कहुँ घायल कइ दीन्हा॥
सीय राम मय सब जग जानी। भये कारसेवक बलिदानी॥
यह बलिदान व्यर्थ नहिं होई। मन्दिर रोक सकी नहिं कोई॥
मन्दिर हुवें बनावा जाई। जहाँ जनम लीन्हेन्ह रघुराई॥

लिखी पुनः बलिदान-कहानी

भगीरथ राकेश

रक्त स्नान कर उठी अयोध्या, लाल हुआ सरयू का पानी।
राम-कृष्ण की संतानों ने, लिखी पुनः बलिदान-कहानी ॥

जन्मभूमि भगवान राम की, जन-जन को प्राणों से प्यारी।
यह पवित्र धरती है अपनी, इसकी महिमा जग से न्यारी ॥
खाई है सौगन्ध सभी ने, चाहे प्रलय भले आ जाए।
मन्दिर वहीं बनायेंगे हम, चाहे प्राण भले ही जाए ॥
'दिगन्त डोले, धरती कांपे, राह न कोई रोक सकेगा'।
'नया सवेरा फिर जागेगा, एक नया इतिहास बनेगा' ॥
निकल पड़े थे कोटि-कोटि जन, देने को अपनी कुरबानी।
राम-कृष्ण की संतानों ने, लिखी पुनः बलिदान-कहानी ॥१॥

इधर निहत्थों का हुजूम था, आग उगलती उधर गोलियाँ।
मोह छोड़कर निज प्राणों के, मचल उठी थी वीर टोलियाँ
कहकर 'जय श्रीराम' सभी ने, तान दिये फौलादी सीने।
'धांय-धांय' बन्दूकें गूँजी, चमकी असुरों की संगीने।

सत्ता की अन्धी गलियों में, भारत का गौरव रोता था।
खण्ड-विखण्डित हुई अस्मिता, माता का आँचल लुटता था॥
बिलख रहा सम्मान देश का, किन्तु तड़पती नयी जवानी।
राम-कृष्ण की संतानों ने, लिखी पुनः बलिदान कहानी॥२॥

उठो देश के कवियों, जागो, गरम रक्त में कलम डुबाओ।
राष्ट्र-विटप की रक्षा के हित, घर-घर में संदेश सुनाओ॥
लिखो, बावरी सत्ता अब भी, इस धरती पर खून बहाती।
संत-तपस्वी के शोणित से, जो नित अपनी प्यास बुझाती॥
लिखो खून से वही गीत, जो नस-नस में लावा धधका दे।
जिसको पढ़कर नई रवानी, पत्थर में भी आग लगा दे॥
नहीं मिटी है, नहीं मिटेगी, आर्य देश की भव्य निशानी।
रामकृष्ण की संतानों ने, लिखी पुनः बलिदान कहानी॥३॥

किसने मानवता को रौंदा, किसने नरसंहार कराया,
किसने यह इतिहास मरोड़ा, किसने घर-संसार जलाया ?
कौन आज यह उत्तर देगा, किसने खेली खूनी होली,
किसने मां के लाल छीनकर, अंगारों से भर दी झोली ?
इस चंगेजी रक्तपात की, कीमत कौन चुका पायेगा,
इस बर्बर, हिंसक घटना को, यादें कौन भुला पायेगा ?
लाशों पर लाशें गिरती थी, फिर भी झुके न वे तूफानी।
रामकृष्ण की संतानों ने, लिखी पुनः बलिदान-कहानी॥४॥

प्रताप-प्रतिज्ञा

रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरोध'

चलो जहाँ पर जली शहीदों की अनगिनत चिताएँ ।
जहाँ राम के भक्तों ने अपने सिर सुमन चढ़ाए ॥
जहाँ मुलायम सिंह यादव ने खेली खून की होली ।
जहाँ निहत्थों पर थी जमकर बरसी लाठी गोली ॥
जहाँ भूमि पर रक्ताक्षर में 'सीताराम' लिखा है ।
जहाँ चरम बलिदान-शौर्य की बलती अग्नि-शिखा है ॥
जहाँ देश की आत्मा बेबस संस्कृत तड़प रही है ।
जहाँ प्रजा के हक को जालिम सत्ता हड़प रही है ॥
जहाँ खून से रंगी गयी हैं गलियाँ-सड़कें सारी ।
जहाँ चीखता सन्नाटा है, भारत माँ दुखियारी ॥
जहाँ शवों को ढोते-ढोते सरजू थकी पड़ी है ।
जहाँ देश-द्रोही 'मुल्लर' की टोली अभी खड़ी है ॥
जहाँ पड़ी सड़ रहीं चतुर्दिक जली-अधजली लाशें ।
जहाँ ले रहा लोकतंत्र जीवन की अन्तिम सांसें ॥
जहाँ मनुजता क्षत-विक्षत शोणित से सनी हुई है ।
जहाँ पवित्र भूमि राघव की मरघट बनी हुई है॥

जहाँ देश का संविधान बेबस निज सिर धुनता है।
जहाँ न्याय-कानून स्वयं अपना कफ़न बुनता है॥
जहाँ अघोषित तानाशाही का है दृश्य घिनौना।
जहां 'धर्मनिरपेक्ष नीति' का जिबह हुआ मृग-छौना॥
कसम हमें है राम-काज-हित हँसकर मरने वालो।
कसम हमें है देश-धर्म पर सब कुछ धरने वालो॥
जब तक नहीं मिलेगी हत्यारों को मौत या फाँसी।
तब तक नहीं शांति से सोयेंगे हम भारतवासी॥
जब तक सीस सुरक्षित धड़ पर शैतानों का वीरों।
जब तक बजा रहा है बंशी आर्यभूमि पर नीरो॥
जब तक यहाँ 'मुलायम', 'मधुकर', 'वी० पी०' से पाखंडी
हत्यारे 'उस्मान' औ 'जोशी, 'सम्पत' सदृश शिखण्डी॥
जब तक नहीं बुझेगी ज्वाला आग न होगी ठण्डी।
अहरह बिगुल बजेगा रण का, नाचेंगी रणचण्डी॥
तब तक अडिग प्रताप-प्रतिज्ञा कर में खड्ग भवानी।
लेकर निर्भय चला करेगी तरुणाई बलिदानी॥
जब तक नहीं बनेगा मन्दिर केसरिया सिर होगा।
"राम-जन्म-भू" का आन्दोलन तनिक नहीं थिर होगा।
जब तक नहीं चुकेगा बदला चैन न हम सब लेंगे।
पशु को पशु की ही भाषा में हम जवाब अब देंगे॥

मेरे जख्मों का हिस्सा

अनुराधा बनर्जी

साधु, मुझे यह मालूम नहीं
तुम राम को कितना चाहते थे।

केशव, मुझे मालूम नहीं
जब सर पे तुमने
भगवा दुपट्टा बांधा था,
तब तुम्हारे पूरे शरीर में
खून किस तेजी से दौड़ा था।

मुझे यह भी मालूम नहीं
हम जो इन घरों में
निर्विरोध कैद हैं,
और कर्फ्यू की ढील के बीच
भोजन जुटाने में व्यस्त हैं,
हमारा तुम दोनों के साथ
कौन-सा रिश्ता है।

पर केशव, तुम सुनो
और
साधु, तुम भी,
आज मैंने
तुम लोगों को
और
लाखों को
इस राम के देश में
धूल पर छलनी पड़ा देखा है
तुम्हारे खून से तर भगवा दुपट्टे ने
मेरे हाथों को भी रंग डाला है।
बावजूद इस पशोपेश के
एक बुद्धिजीवी के तमाम तर्कों के
कि
ऐतिहासिक विवाद कितना
सही
और कितना गलत है—
मैंने इतना जाना है—
तुम्हारा खून बहा है गलियों में
और वह मेरे ही जख्मों का हिस्सा है।

जलम भूमि रा दूहा

बस्तीमल सोलंकी 'मीम'

राम विरोधी जो नरप-उणरी पतली दाल।
रावण कंस हरणाकुश तीनूं भूण्डा हाल॥

श्री रामविरोधी जो नृप हुए हैं उनके सदा बुरे हाल हुए। रावण, कंस और हिरण्यकश्यप, तीनों दुर्गति को प्राप्त हुए।

राम जलम अवधपुरी जाणें सै संसार।
साख भरे इतिहास ओ-उठे राम औतार॥

अयोध्या राम की जन्मभूमि है इसे सारा संसार जानता है। इतिहास इसका साक्षी है कि श्री राम का अवतार यहीं हुआ।

राम गादी बैठा नृप अनरथ कीन्ह अनेक।
राम भगत रज-कण रंगी-रगत अवध में देख॥

शासकों ने अनेक अनर्थ किये, किन्तु राम-भक्तों ने अयोध्या के कण-कण को अपने रक्त से रंग दिया।

नर संहार जबर हुयो—रगता कीचा कीच।
गन सूँ दागी गोलियां राम भगत पर नीच ॥

नीच शासकों ने रामभक्तों पर गोलियाँ चला दी और भयंकर नरसंहार हुआ, रक्त की नदियाँ बह चलीं।

जनता बाजी जीतगी गोळी छाती झेल।
बीकाणे रा लाडला-गया अमरता गेल ॥

सीने पर गोली खाकर जनता बाजी जीत गई। बीकानेर के सपूत रामकुमार और शरद कोठारी हँसते-हँसते अमरता के पथिक हो गये।

मरुधर केरा नाहर दौड़ कटाया माथ।
सेठू जसरो मोड़ ओ—धिन्न महेन्दर नाथ ॥

मारवाड़ के शेरों ने दौड़कर अपना शीश समर्पित कर दिया। मथानिया निवासी सेठाराम और जोधपुर के प्रो० महेन्द्रनाथ धन्य हैं, जिन्होंने अपने प्राण बलिदान कर दिये।

शूराँ गया सुरग में रगता होळी खेल।
ऐ राम-राम गवता-रगता रेलम पेल ॥

ये बलिदानी शूरमा रक्त की होली खेल कर राम-राम कहते स्वर्ग पथ के पथिक हो गये। बलिदान से हिच-किचाये नहीं।

दधीचि सन्तानों के प्रति

कृष्ण मित्र

अस्थि कलश के भीतर बैठी
इन दधीचि सन्तानों को
याद करेंगे युगों-युगों तक
भक्तों के बलिदानों को।

जन्मभूमि के मन्दिर के हित जो भी नर संहार हुआ
सरयू का जल बता रहा है कितना अत्याचार हुआ
राम नाम रटने वालों पर जालिम की गोलियाँ चली
गुम्बद बता रहे हैं कैसे भक्तों की टोलियाँ चली
कैसे फहरा था भगवा ध्वज पूछो इन दीवानों को
याद करेंगे युगों युगों तक भक्तों के बलिदानों को।

पुत्रवती माताओं का आशीष, अस्थिकलशों में है
वृद्ध पिताओं की पूरी बखशीश अस्थि कलशों में है
बहनों की राखियाँ इन्हीं में, चूड़ी बिंदी भी इनमें
सिन्दूरी सौभाग्यवती की शीतल मेंहदी भी इनमें
स्नेह बन्धुओं का निहारता कलशों की मुस्कानों को
याद करेंगे युगों-युगों तक भक्तों के बलिदानों को।

आओ नमन करें सादर इन बलिदानी बलवीरों को
मन्दिर के हित न्योछावर इन अभिमानी रणधीरों को
ये दधीचि के वंशज मन्दिर के हित बढ़े समर्पण को
वृत्रासुर वध करना है लो बढ़ो जवानो तर्पण को
देवासुर संग्राम बना दो इन नवीन अभियानों को
याद करेंगे युगों युगों तक, भक्तों के बलिदानों को।

मन्दिर वहीं बनेगा

महेन्द्र कुमार 'सरल'

है सत्य कटु भले ही, पर सत्य ही रहेगा।
प्रतिकूल तथ्य कैसे युगधर्म के सहेगा।
उच्छिष्ट से पले, ओ इतिहासकार ! बोलो,
इतिहास कल तुम्हें क्या वंचक नहीं कहेगा ?।

पुरियों में प्रथम पूज्या, प्रतियाम की अयोध्या।
सरयू की सखी प्यारी, गुण-धाम की अयोध्या।
योध्या न जो, बनाते संग्राम-भूमि उसको,
मिटने पे क्यों तुले हो, है राम की अयोध्या॥

पूर्वाग्रही, समय से कुछ भी न सीखते हैं।
ओछे, दुराग्रही हैं, सायास चीखते हैं।
मंगल कलश, कमल से, जो स्तम्भ हैं, सुशोभित,
आश्चर्य, उलूकों को वे भी न दीखते हैं॥

आक्रामकों के कृत्यों पर, व्यर्थ फूलते हो।
श्रीराम से, कुकर्मी (विधर्मी) बाबर को तूलते हो।
आस्था युगों से, जिससे, जन-जन की जुड़ी आती,
वह धर्म की धरा है, यह बात भूलते हो॥

क्या धर्मग्रन्थ कोई हमने कभी जलाया ?
पूजागृहों को किसके, हमने कभी मिटाया ?
कासिम हो या गजनवी, गोरी सभी लुटेरे,
सम्बन्ध इनसे जोड़े, वह क्यों न हो पराया ?

उन आत्मवंचकों को, यह काल सीख देगा।
यह आर्य देश, उनसे प्रतिशोध शीघ्र लेगा।
जम्बूक हैं हुआते, यह सिंह की न चिन्ता,
श्रीराम जहां जन्मे, मन्दिर वहीं बनेगा॥

अटल संकल्प

सरोज श्रीवास्तव 'नीलम'

यही अटल संकल्प हमारा
रामलला हम आयेंगे
मन्दिर वहीं बनायेंगे ॥

यदि मन्त्री जी रेल रोक दें
मोटर से हम आयेंगे
मन्दिर वहीं बनायेंगे ॥

यदि मोटर भी बन्द हुई तो
पैदल ही हम आयेंगे
मन्दिर वहीं बनायेंगे ॥

यदि सड़कों को काट दिया तो
खेतों से हम आयेंगे
मन्दिर वहीं बनायेंगे ॥

यदि पुल पर दीवार बनी तो
उसे तोड़ हम आयेंगे।
मन्दिर वहीं बनायेंगे॥

यदि पुल को भी उड़ा दिया तो
नदी तैर हम आयेंगे
मन्दिर वहीं बनायेंगे॥

यदि तार कटीले बिने गये तो
उन्हें काट हम आयेंगे
मन्दिर वहीं बनायेंगे॥

यदि गोली चल जायेगी तो
गोली भी हम खायेंगे
मन्दिर वहीं बनायेंगे॥

यदि शव नदियों में फिकवा दें
पुनर्जन्म हम पायेंगे
मन्दिर वहीं बनायेंगे॥

यही अटल संकल्प हमारा
रामलला हम आयेंगे
मन्दिर वहीं बनायेंगे॥

इन्हें पहचानिये

ओम प्रकाश पारीक

कौन हैं वे जो अयोध्या में मृत्युपर्व मना रहे थे ?
कौन हैं ये जो अपना लहू पानी सा बहा रहे थे ?

कौन हैं वे जिनके मुँह से खून टपक रहा था ?
कौन हैं ये जिनका लाल मस्तक गर्व से दमक रहा था ?

कौन हैं वे जो लाशों के ढेर से खेले थे ?
कौन हैं ये जो लाठी-गोलियों को सीने पे झेले थे ?

कौन हैं वे जिन्होंने अयोध्या को द्रोपदी-सा घसीट दिया था ?
कौन हैं ये जिन्होंने दुर्योधन का वक्ष भीम-सा चीर दिया था ?

कौन हैं वे जो रक्त पीकर अपनी प्यास बुझा रहे थे ?
कौन हैं ये जो रक्त पिला-पिलाकर दरिन्दों को मिटा रहे थे ?
कौन हैं वे जो परिन्दों के पर भी नोच रहे थे ?
कौन हैं ये जो गरूड़ से ध्वजा ले शिखर पे चढ़े थे ?
कौन हैं वे जो राजनीति के कीचड़ में कीड़ों से कुलबुला रहे हैं ?
कौन हैं ये जो धर्म के तालाब में कमल से मुस्कुरा रहे हैं ?
कौन हैं वे जो वोटों के लिये मवाद पड़े घाव सा सड़ रहे हैं ?
कौन हैं ये जो मन्दिर के लिये हिमालय से अड़ रहे हैं ?
कौन हैं वे जो शपथ संविधान की खाकर शराबी से झूम रहे हैं ?
कौन हैं ये जो शपथ राम की लेकर सुदर्शनचक्र से घूम रहे हैं ?
कौन हैं वे जो अपने वस्त्रों से लहू के धब्बे छुड़ा रहे हैं ?
कौन हैं ये जो भगवा रंग में जगत को रंगा रहे हैं ?

राम भक्त के बलिदानों से

विष्णु गुप्त 'विजिगीषु'

राम भक्त के बलिदानों से, मन्दिर भव्य बनेगा।
भीषण ज्वार उठाओ वीरों, मन्दिर वहीं बनेगा॥
सत्ता के मायावी दानव, तुमने बेचा धर्म देश है।
जीवन के आदर्श मिटाये, अपमानित संस्कृति स्वदेश है॥
इनके चेहरे रंग बिरंगे, गिरगिट के घर वाले।
घर घर में हैं जहर घोलते, साँप हैं दो मुँह वाले॥
देश की छाती को मिलती है, अब सरकारी गोली।
गद्दारी कुर्सी, कंचन चाँदी से जाती तौली॥

सच कहते जिह्वा जलती है, आँख बन्द हो जाती।
मन्दिर को मस्जिद बतलाते, लाज नहीं है आती॥
सभी जानते और मानते, दशरथ धाम यही है।
जन्मभूमि भगवान राम की, जग अभिराम यही है॥

युगों युगों से श्रुति, पुराण का अद्भुत अवध यही है।
वाल्मीकि के राम जहाँ जन्मे साकेत यही है॥
रामलला की जन्मभूमि, पावन सुरलोक यही है।
भरत तपस्वी, ऋषि वशिष्ठ की पावन भूमि यही है॥

विक्रमादित्य ने शोध किया, पावन मन्दिर बनवाया।
और कसौटी शिलाखण्ड से, सुन्दर सौध बनाया॥
उसके चिन्ह बोलते अब भी, मन्दिर भव्य यही है॥
बाबर सेनापति ने तोड़ा, कहता शिल्प अभी है।
गजेटियर सरकारी कहता, कहता बाबरनामा।
मन्दिर तोड़ इसे पहनाया, था मस्जिद का जामा॥
पुरातत्व के सभी मनीषी, कहते यही कहानी।
मन्दिर था, अब भी मन्दिर है, स्वापत्य निशानी॥

मगर जाहिलों ने वोटों के खातिर देश लड़ाया।
सत्य, न्याय का गला घोंटते तनिक नहीं शरमाया॥
अवधपुरी को जेल बनाया, सेना से घिरवाया।
जैसे कोई यहाँ विदेशी सेना लेकर आया॥
अपनी जनता रामभक्त थी, कीर्तन करती जाती।
रामलला के दर्शन को वह रह रह थी अकुलाती॥
बिना किसी संकेत, वहाँ थी गोली गई चलाई।
राम भक्त के उष्ण लहू से, सरयू अवध नहाई॥

उनकी आहों से जग में जो नव इतिहास बनेगा।
राम भक्त के बलिदानों से वह मधुमास बनेगा॥
बाबर की सन्तानों की अब, दाल न गलने देंगे।
आस्तीन में पलने वाले, साँप न पलने देंगे॥
शकुनि, दुशासन, दुर्योधन को और न छलने देंगे।
केश कविता नारी की अब, लाज न लुटने देंगे॥
जयचन्दी शोणित का सिक्का खोटा सिद्ध हुआ है।
सत्ता पर मँडराने वाला, कुत्सित गिद्ध हुआ है॥

राजनीति के सागर में फिर बुद-बुद एक उठा है।
स्वप्न संजोकर बनकर पी० यम० फिर से गया ठगा है॥
नाच रहा कठपुतली बनकर कहता खेल नया है।
लफ्फाजी भाषा का नायक, भूला गणित यहाँ है॥
छत्तीस होकर बने तिरेसठ, कुछ दिन जशन मना ले।
कुछ दिन के मेहमान, स्वार्थ सत्ता के रखवाले॥
राजनीति के महासिन्धु में, तुम केवल हिचकोले हो।
प्राण वायु है कहीं तुम्हारी, नाविक नहीं हिण्डोले हो॥

हत्यारों का साथ निभाये, हत्यारा कहलाता।
राजनीति के कुटिल खिलाड़ी, अपनी मौत बुलाता॥
जलियांवाला बाग न भूला, डायर याद हमें है।
रावण कंस, दुशासन सारे, कब से याद हमें हैं॥

नर संहार अयोध्या वाला, कभी न नर भूलेगा।
नर हत्या का पाप तुम्हारी, छाती पर फूलेगा॥
रामभक्त का अमर रक्त है, व्यर्थ नहीं जायेगा।
रक्त शहीदों का धरती पर, नया अर्थ पायेगा॥

अधिक दिनों तक नहीं मनेगी, तेरी यह दीवाली।
जागरूक जनता आती, सिंहासन कर दो खाली॥
धरती अम्बर गूंज रहा है, लख इनकी कुर्बानी।
बच्चा-बच्चा बोल रहा है, हर-हर-बम-बम बानी॥
धरती का यौवन जागा है, जागा प्रताप का पानी।
ऋचा श्लोक, चौपाई जागी, जाग उठी गुरुवानी॥
शौर्य जगा गोरा बादल का, जागी हाड़ा रानी।
जागी दुर्गावती क्षत्राणी जागी झांसी रानी॥

छत्रसाल, बप्पा, जागा है, तुलजा अमर भवानी।
जौहर जागा ललनाओं का, बूंदी अमर कहानी॥
हरीसिंह नलवा जागा है, भगतसिंह बलिदानी
रोशन सिंह अश्फाक जगे, बिस्मिल की वीर जबानी॥
आगे कदम बढ़ाया अब तो, पीछे कदम न होगा।
कफन बांधकर सिर से निकले, मन्दिर वहीं बनेगा॥
चण्डी बनकर माता निकली, दुर्गा बनकर नारी।
साथ हमारे आज चले हैं, संत सुदर्शन धारी॥

समझ गये सब चाल तुम्हारी, अब न दाल गलेगी।
सोच समझ के द्वारे आना, झोली नहीं भरेगी॥
माताओं की कोख कमल से, ऊधमसिंह जनमेगा।
दिनकर बनकर मदन धींगरा, तम का त्रास हरेगा॥
चाहें जितने शीश चढ़ें, पर मन्दिर वहीं बनेगा।
सत्ता रहे भले मिट जाये, मन्दिर वहीं बनेगा॥
लाठी गोली और तमंचे, सीने पर खायेंगे।
राम काज के लिये जगत में मरकर तर जायेंगे॥

हिन्दू ने अंगड़ाई ली है, मन्दिर भव्य बनेगा।
करने मरने की ठानी है, मन्दिर वहीं बनेगा॥
निकल पड़ी है वानर सेना, रोके नहीं रुकेगी।
राम काज को किये बिना, अब क्षणभर चैन न लेगी॥
संगीनों की नोंकें चाहे, लाख उरों में धायें।
रंगे रक्त से धरा गगन या, राम धाम को जायें॥
कोटि-कोटि हिन्दू जन का अब भीषण ज्वार उठेगा।
चूर-चूर सत्तायें होंगी, मन्दिर वहीं बनेगा।

किसका हिन्दुस्थान है

जगदीश प्रसाद 'स्थापक'

जन्म भूमि मानवता की, जिससे यह देश महान है।
नहीं राम का तो बतलाओ, किसका हिन्दुस्थान है॥

जहां हुआ अवतरित ब्रह्म-साकार अयोध्या धाम वहीं।
हर हिन्दू के हृदय देश में रमने वाला राम वहीं।
धर्म शक्ति को ढोंग न समझो, यह बलिदानों की भाषा।
अखिल देश के शौर्यत्याग की मूर्तमन्त इसमें आशा॥
भारत के भविष्य का केवल एक राम ही त्राण है।
नहीं राम का तो बतलाओ, किसका हिन्दुस्थान है॥

जाग्रत होकर न्याय मांगना क्या मानव का धर्म नहीं ?
संघर्षों बलिदानों के पथ में बढ़ना क्या कर्म नहीं ?
छोटी सी चिन्गारी अब तो बदल गई अंगारों में।
हुआ चाहती भस्मसात, कालिका इन्हीं अंगारों में ॥
गूंज रहा भारत के नभ में एक अलौकिक गान है।
नहीं राम का तो बतलाओ, किसका हिन्दुस्थान है ॥

विषधर पलते, राजनीति की बीन उन्हें स्वरलय देती।
वर्तमान की विजय दौड़ हिंसा भय को आश्रय देती।
उस भविष्य की कल्पना क्या, पछताना जब बाकी होगा।
आने वाली पीढ़ी थूकेगी, तर्पण बाकी होगा ॥
वेद, उपनिषद, गीता, रामायण ही हिन्दुस्थान है।
नहीं राम का तो बतलाओ, किसका हिन्दुस्थान है ॥

क्योंकि तुम राम हो

संगीता गुप्ता

राम !
तुम हमारी श्रद्धा हो,
हमारा विश्वास हो।

तुम तर्कों से परे हो,
हमारी संस्कृति की धरोहर हो,
हमारे निज की पहचान हो।

तुम्हारा जीवन, तुम्हारी मर्यादा
तुम्हारा त्याग, तुम्हारा संघर्ष
हमारी प्रेरणा है,
हमारे आदर्श का द्योतक है।

राम ! तुम मात्र एतिहास नहीं,
न ही तुम बाल्मिकि या तुलसी
के रचे साहित्य का एक पात्र-मात्र !
तुम तो हमारी सकल आस्थाओं
का पुंजीभूत रूप हो।

राम ! तुम हमारे उन्माद के नहीं
गौरव के प्रतीक हो।
तुम्हारा संबंध मात्र हमारे धर्म से नहीं
सारी मनुष्यता से है,
हमारे सम्पूर्ण जीवन से है।

जीवन में, सृष्टि में
जो सत्य है, सुन्दर है
जो उज्ज्वल और मधुर है
तुम उसके मूर्तरूप हो।
हमारा-तुम्हारा रिश्ता तो
भावनाओं का है।
तुम किसी भी विवाद से ऊपर हो
—क्योंकि तुम राम हो।

कीर्ति तुम्हारी अमर रहेगी

जुगलकिशोर जैथलिया

राम-शरद इतिहास सदा
गायेगा गान तुम्हारा।
कीर्ति तुम्हारी अमर रहेगी,
जब तक सरयू धारा ॥१॥

जन्मभूमि के उच्च शिखर पर,
भगवाध्वज फहरा कर।
मान रख लिया देश, धर्म का,
अपनी बलि चढ़ाकर ॥२॥

धन्य पिता श्री हीरालालजी,
धन्य सुमित्रा माता।
बहन पूर्णिमा धन्य हुई,
पाकर ऐसे दो भ्राता ॥३॥

धन्य संघ संगठन तन्त्र,
तुमसे दृढ़ वीर बनाये।
विपदाओं को कर अनदेखा,
निर्भय कदम बढ़ाये ॥४॥

हुई प्रतीक कार सेवा,
अब नव निर्माण करेंगे।
जब तक काम न पूरा होगा,
चैन नहीं हम लेंगे ॥५॥

गरज रहा है रोष रे

कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'

खून खौलकर बोल रहा है, लरज रहा है जोश रे
'मन्दिर वहीं बनायेंगे हम' गरज रहा है रोष रे
लोकतन्त्र हो रहा आग-सा लपटें चूम रहीं अम्बर
जय बोलो जय राम लला की गूँज रहा है घोष रे
रामराज के सतत उपासक रामराज हम लायेंगे
शीश कटायेंगे इसके हित दे गे अपना कोष रे
बाधाओं का दमन करेंगे शैलों से टकरायेंगे
बैठाये गे आज ठिकाने हम दुष्टों के होश रे ॥

० ० ०

श्रीराम ज्योति से दीप जलेंगे दीवाली होगी घर, घर
'हम मन्दिर वहीं बनायेंगे', यह धरा गगन में गुञ्जित स्वर
बम भोले की काशी आन्दोलित जय महादेव जय हर हर
मथुरा में रास रचाये गे गोपीवल्लभ नटवर-नागर

जन्मभूमि से राम की
पावन ज्योति चली

लाजपत राय 'विकट'

नगर-नगर हर गांव-गांव हर गली-गली
जन्म भूमि से राम की पावन ज्योति चली,
होगा धर्म का नया सवेरा
अब अधर्म की रात ढली।
जन्म भूमि से राम की पावन ज्योति चली ॥

यह प्रताप है तपो साधना का प्रभो राम की माया है,
सभी देवताओं का आशीष पावन ज्योति ने पाया है,
तेज सूर्य का इस प्रचण्ड ज्योति में आज समाया है,
राम लला फिर ज्योति रूप में इस धरती पर आया है,

हे दशरथ नन्दन—जय श्री राम
हे रघुनन्दन—जय श्री राम
यह तेरी धरती—जय श्री राम
यह तेरा अम्बर—जय श्री राम
तू कण-कण में—जय श्री राम
तू सबके मन में—जय श्री राम
सन्तों के अरणी मन्थन से अवधपुरी में ज्योति जली।
जन्म भूमि से राम की पावन ज्योति चली ॥

जो भटक गये थे राम ज्योति ने उनको मार्ग दिखाया है,
घर-घर जाकर दीवाली का पहला दीप जलाया है,
अन्धकार को चीर एक नूतन प्रकाश बिखराया है,
हर हिन्दू के अन्दर का सोया हिन्दुत्व जगाया है,
वो सरयू का तट—जय श्री राम
जहाँ खड़ा है केवट—जय श्री राम
सब भक्त निहारें—जय श्री राम
सब तुझे पुकारें—जय श्री राम
अवतार पुन: लो—जय श्री राम
अब धर्म बचा लो—जय श्री राम
आज तेरे स्वागत में कितने खड़े तेरे बजरंगबली।
जन्मभूमि से राम की पावन ज्योति चली ॥

धर्म बचाने को ऋषि अत्री ने जो शस्त्र प्रदान किया,
वो शस्त्र उठा लेंगे यदि जन्मभूमि का अपमान किया
'राम शिला' ने भक्ति दी और 'राम ज्योति' ने ज्ञान दिया
हर शहीद के 'अस्थि कलश' ने शक्ति का वरदान दिया,

सन्तों की शक्ति—जय श्री राम
भक्तों की भक्ति—जय श्री राम
पहचान हमारी—जय श्री राम
है जान हमारी—जय श्री राम
निर्विघ्न बनेगा—जय श्री राम
वो भव्य बनेगा—जय श्री राम

जन्म भूमि पर राम का मन्दिर राम भले की करें भली।
जन्म भूमि से राम की पावन ज्योति चली॥

राम नाम के इनकलाब को कोई रोक नहीं सकता है

सुरेश कुमार 'संभव'

राम नाम के इनकलाब को कोई रोक नहीं सकता है।
हिन्दू के पौरुष प्रताप को कोई रोक नहीं सकता है।

कहो लुटेरों से जा करके जाग उठी है बस्ती-बस्ती
खून सनी तलवार भीख कर माँग रही है बस्ती-बस्ती
शहर-शहर से आग उठ रही गाँव-गाँव से उठती ज्वाला
कदम-कदम पर हर हिन्दू है अन्तिम मूल्य चुकाने वाला।

जनाक्रोश का गला पकड़ कर कोई घोट नहीं सकता है।
राम नाम के इनकलाब को कोई रोक नहीं सकता है।

सत्ता के लोलुप अब संभलो छोड़ो अपनी सौदागीरी
बहुत बज चुकी धर्म और निर्पेक्ष राष्ट्र की बीन सुरीली
बैशाखी टूटी अब फेंको हिन्दुस्थान बदलने वाला
भारत का सूरज पूरब से कोई नया निकलने वाला

दुनिया के इस आफ़ताब को कोई रोक नहीं सकता है।
राम नाम के इनकलाब को कोई रोक नहीं सकता है।

पृथ्वीराज के साथ शिवा राणा का पौरुष बोल रहा है।
आजादी का प्रथम पृष्ठ भारत यह अपना खोल रहा है।
गूंज उठा जयघोष समर है शेष देश का होने वाला
उठा क्रांति का खड्ग खड़ा है शांति बीज का बोने वाला

शांति क्रांति का अग्रदूत यह देश ले रहा फिर अंगड़ाई
युगों-युगों से अजर अमर अक्षुण भारत भू की तरुणाई
यही शांति का उद्घोषक है यही क्रांति का भाग्य विधाता
इस धरती पर खून बहा है कितना यह इतिहास बताता

अवध पुरी में प्रलय मची तो कोई रोक नहीं सकता है।
राम नाम के इनकलाब को कोई रोक नहीं सकता है।

गौरव की रक्षा करना इन नेताओं का काम नहीं है।
गद्दारों भ्रष्टाचारों का महासमर में नाम नहीं है।
कह दो उनसे देश छोड़ दें भारत उनका धाम नहीं है।
भारत कौन कहेगा आखिर भारत में यदि राम नहीं है।

मंदिर वहीं बनेगा इसको कोई रोक नहीं सकता है।
राम नाम के इनकलाब को कोई रोक नहीं सकता है।

रामलला की कसम तुम्हें है

रमेश मोरोलिया

रामलला की कसम तुम्हें है, राम-कार करवाना है।
गदा हाथ ले बांध लंगोटा, मंदिर भव्य बनाना है॥
बाधायें जो रस्ता रोकें, उनको मार गिराना है।
जहां प्रकट भये दीनदयाला, ज्योति से ज्योति जगाना है॥

कोठारी बन्धु दीवाने धर्म ध्वजा फहरा आये।
राम लला की जन्म भूमि पर अपनी भेंट चढ़ा आये।
उसी लक्ष्य पर तुम्हें पहुंच कर उनका मान बढ़ाना है।
गदा हाथ ले बांध लंगोटा, मंदिर भव्य बनाना है।

और अनेकों राम-सेवकों की कुर्बानी याद रहे।
सरयू की धारा में जिनके बर्बरता से खून बहे॥
पुण्य शहीदी आत्माओं का, सपना तुम्हें सजाना है।
गदा हाथ ले बांध लंगोटा, मंदिर भव्य बनाना है॥

राम नाम लेने पर ऐसा हत्याकाण्ड नहीं देखा।
हत्यारी सरकार ने लांघी, मर्यादा की सब रेखा॥
राम द्रोह करने वालों को, चुन-चुन कर निपटाना है।
गदा हाथ ले बांध लंगोटा, मंदिर भव्य बनाना है॥

राम का निर्वासन क्यों ?

बावरा शहीद 'बनारसी'

"अरे राम, राम, राम !
ये क्या किया ?
राम को फिर निर्वासित किया ?'
'लगता है कहीं कोई कैकयी फिर रूठी है,
लगता है कहीं कोई दशरथ फिर फँसे हैं'—वचन की आन में !
लगता है कही कोई दशानन फिर सत्ता में है—
'राज करइ निज मंत्र' !
लगता है फिर संसार भ्रष्ट हुआ,
'धरम सुनिअ नहीं काना' की हालत है !
वरना बोलो मेरे राम को फिर बनवास क्यों ?"

व्यंग्य के माध्यम से कवि ने तथाकथित प्रगतिशील बुद्धिजीवियों की 'अक्ल' के तालों को खोलने की कोशिश की है।

और आगे फरमाते हैं
हमारे नासमझ भाई—

'अजब है यह वनवास—विचित्र है यह निर्वासन !
न कहीं केवट, न कहीं निषाद,
न कहीं चित्रकूट, न कहीं मिलाप,
न कहीं बनी कोई पंचवटी है,
न कहीं किसी सूपनखा की नाक कटी है,
न कहीं किसी सीता का हरण हुआ है,
न कहीं किसी जटायु का मरण हुआ है,
न कहीं कोई लंका जली है,
न कहीं कोई विभीषण की पाला बदली है
कहाँ किसी बानर ने सेतु बाँधा है
कहाँ किसी ने रावण वध की बात कही है
तब किसलिए राम को निर्वासित किया गया है ?'
पूरी रमायन सुना गये,
अपने दिल का गुबार
दोस्त के दर पर निकाल गये !

सुनो मेरे अजीज,
पहले बताओ राम थे कहाँ, जो निकाले गये !
हाँ राम का नाम था,
वह भी तुम्हारा ही फैलाया कोहराम था !
सो इसबार आजिज आकर हमने स्ट्रैटेजी बदली है,
हमें इस बार तुम्हारे राम का नाम ही मिटाना है,
इसे इतिहास, पुराण सब जगह से भगाना है।
न रहेगा नाम, न बजेगी डफली,

समझ बरखुरदार, मियां अशोक बली !
आगे सुनो बात—
तुम कहते मुरदे से
'राम नाम सत्य' है !

मगर कहो तो सोचकर, राम का नाम सत्य कैसे हो सकता है ?
एक शायर के दीवान के खास 'हीरो' को
किसी खयाली शहर के, खयाली राजकुमार को
भगवान, अल्लाह या खुदा कैसे मान लें ?
उसे तो 'मसीहा' का दर्जा देना भी मुश्किल है।

फिर तुम्हारे पुरोहितों ने उसे 'सत्य' भी कह दिया—
हद किया !
मगर हमारे काबिल आधुनिक इतिहासकार
कतई मंजूर नहीं करते यह थोथी बात,
वे क्यों आलिम फाजिल दानिशमंद
बुद्धिजीवी, नामवर, विद्वान
कोई भी तो नहीं मानते यह बचकानी बात !
कल खोजने निकलोगे अलीबाबा को
किसी अलादीन या जिन या चहार दरवेश को
अमां ये किस्से हैं किस्से, असलियत नहीं !
अरे ये पुराण पंथी दकियानूस रूढ़िवादी
पोंगा पण्डित तुम्हें बरगलाते हैं,
सरे बाजार खोटे सिक्के भुनाते हैं।
एक राजा के लड़के को 'भगवान' बताते हैं ?
यह स्वारथरत धनवानों का करिश्मा है,
साम्प्रदायिकता का यह तांडव है,

सत्ता के दलालों का यह सीधा षडयन्त्र है !

खुदा गवाह है,
अब जनता का राज है,
अब जनता ही भगवान है
सच्चा है वोट और नेता का सच्चा नाम है !
सुनो मेरे पथ भूले साथी,
सुनो मेरे गुमराह दोस्त,
सत्ता के बाम में बैठे, विद्वानों की बात सुनो,
फनकारों की, शायरों सिने-स्टारों की बात सुनो,
वे पते की, सच्ची बात बताते हैं
सहूलियत से स्नेह भरे मुलायम लफ्जों में समझाते हैं
'भाई मेरे छोड़ो भी वेद पुरान की थोथी बातें
गुमराह करने वाले शास्तरों के बयान,
भाई मेरे छोड़ो यह धरम करम की गोली (अफीम की)
समझो यह बम्हन-छत्री बिर्गाट्स का षड्यंत्र
समझो यह बोर्जुआ बाबुओं का चक्रव्यूह
तुम्हारे शोषण का यह खेल पुराना
बाहर आओ इनके फंदे से और देखो—
उनकी ये गंगा कितनी परदूषित हो चुकी है
इससे दूर भागो, नया मजहब अपनाओ
आओ, हमारी बोल्गा के निर्मल जल में नहाओ,
उठाओ हंसिया हथौड़ा, लाल परचम लहराओ !

शुरू करो यह जंग आखिरी—
चलो दिल्ली, चलो राजघाट,
चलो समाधि स्थल तक

जहाँ साम्प्रदायिकता का एक प्रतीक
'धर्म-निरपेक्ष' सरकार की निगाह से छुपा
अनजाने ही बचा-बचा पड़ा रहा
वालिदे मुल्क के मजार पर लिखा—
'हे राम' मिटाओ, खोदकर हटाओ,
अवाम का संताप दूर करो
अंध-विश्वास का अंधेरा दूर करो—
घरों में रोशनी करो पहले,
फिर चलो खुदा के बंदो
मस्जिद में दिया जलाओ।'
सुनो मेरे हमदम—
अकल के ताले खुल गये हों,
तो 'राम' को छोड़ो
'आराम' फरमाओ।
इस 'हुज्जते-बंगाल' से क्या फायदा ?

लो घूम गया रथ

कृष्णराव, के० दौण्ड

लो घूम गया रथ
आलोकित कर गया
जतन से जनपथ
अब कोई भ्रम बाधा
बाधित नहीं करेगी
तीन पगों से अधिक
कहां कोई पथ।
लो घूम गया रथ॥

हुंकारों से सागर भी
लांघा हमने
और उसे मर्यादाओं में
बांधा हमने
नागपाश की मर्यादा है
विवश नहीं है
वर्ना ऐसा क्या है जो
राम कृपा से सुलभ नहीं है
भूले बिसरे बल पौरुष की
अलख जगाए घूम गया रथ।
लो घूम गया रथ॥

दर्पण है विश्वास सनातन

डॉ० दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'

मंदिर था मंदिर है मंदिर रहना चाहिये।
जो सच है उसको साहस से कहना चाहिए।

राम हुये भी थे कि नहीं, ये बौने तर्क हैं,
दुष्प्रचार में नहीं बुद्धि को बहना चाहिये।

दर्पण है विश्वास सनातन, न्यायालय नहीं,
चिह्न विधा तक अपमानों के ढहना चाहिये।

शीश झुका कर जीने से तो अच्छी है चिता,
अन्यायों को नहीं तनिक भी सहना चाहिये।

अतिक्रमण से असर न पड़ता कुछ स्वामित्व पर,
जिसकी है जो वस्तु उसी की रहना चाहिये।

स्वाभिमान को दंशित करते तक्षक वासुकी,
जनमेजय सा यज्ञ रचाकर दहना चाहिये।

ॐ

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

प्रकाशित ग्रंथ

छत्रपति शिवाजी महाराज राज्यारोहण त्रिशताब्दी स्मारिका (१९७४)

हल्दीघाटी चतुश्शती स्मारिका (१९७६)

वन्देमातरम् शतवर्षपूर्ति समारोह स्मारिका (१९७७)

सूरपंचशती स्मारिका (१९७८)

सूरदास : विविध संदर्भों में (ग्रंथ) (१९७८)

अन्तर्राष्ट्रीय बालवर्ष स्मारिका (१९७९)

संत जिन्होंने देश जगाया स्मारिका (१९८२)

बड़ाबाजार के कार्यकर्ता : स्मरण और अभिनन्दन ग्रंथ (१९८२)

वीर सावरकर जन्मशताब्दी स्मारिका (१९८४)

महान विप्लवी चिन्तानायक वीर सावरकर ग्रंथ (बांग्ला) (१९८४)

डॉ० हेडगेवार जन्मशती स्मारिका (१९८९)

रामप्रताप (ब्रज भाषा में रामायण) (१९९०)

वार्षिक पुरस्कार

विवेकानन्द सेवा पुरस्कार

डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा पुरस्कार

इंदिरा शास्त्री गीता पुरस्कार